ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

नवोदय

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की तिमाही गृह पत्रिका । दिसंबर 2024

Navodaya

Punjab & Sind Bank Quarterly House Journal | December 2024

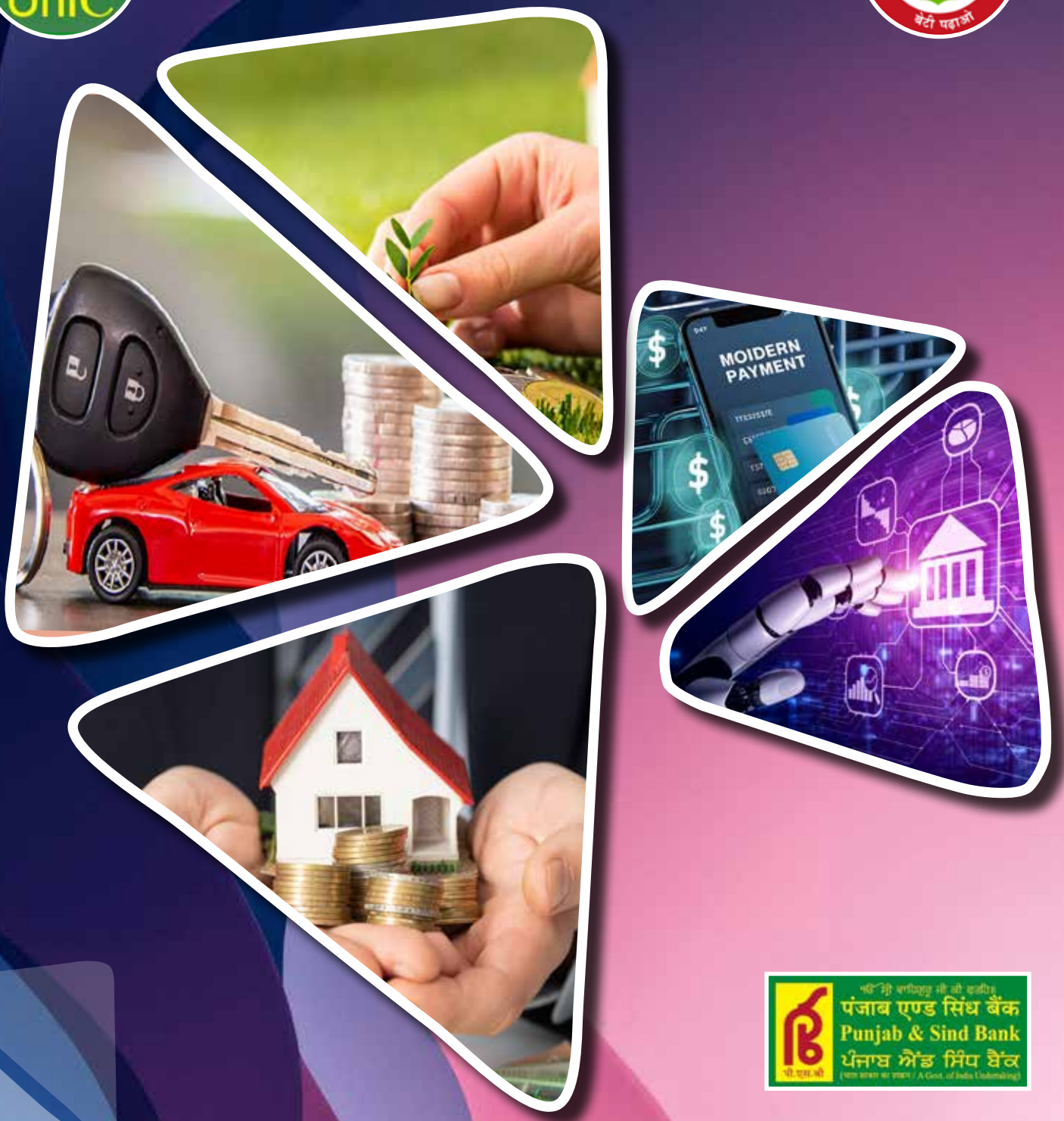

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

Our Bank

has launched
e-Bank Guarantee (e-BG) facility

Our Bank has launched e-Bank Guarantee (e-BG) facility in partnership with National e-Governance Services Ltd (NeSL) that replaces paper-based BG issuance process with e-stamping and e-signatures.

Dr. Charan Singh, Chairman of our Bank was invited as Chief Guest by Punjab agricultural University, Ludhiana on their Golden Jubilee Celebration. To grace the event Zonal Manager Ludhiana and Ex-Staff of our bank were also present there.

नवोदय
पंजाब एण्ड सिंध बैंक की तिमाही गृह पत्रिका | दिसंबर 2024
Navodaya
Punjab & Sind Bank Quarterly House Journal | December 2024

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

प्रधान कार्यालय, बैंक हाउस, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली - 110008
Head Office, Bank House, 21, Rajendra Place, New Delhi - 110008

E-mail: editor.navodaya@psb.co.in

मुख्य संरक्षक/Chief Custodian
श्री स्वरूप कुमार साहा
Shri Swarup Kumar Saha
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी / MD & CEO

संरक्षक / Custodian
श्री रवि मेहरा
Shri Ravi Mehra
कार्यपालक निदेशक / Executive Director

श्री राजीव
Shri Rajeeva
कार्यपालक निदेशक / Executive Director

मुख्य संपादक / Chief Editor
श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर
Shri Gajraj Devi Singh Thakur
महाप्रबंधक / General Manager

संपादक मंडल / Editorial Board
श्री राजेश सी पांडे
Shri Rajesh C Pandey
महाप्रबंधक / General Manager

श्री निखिल शर्मा
Shri Nikhil Sharma
मुख्य प्रबंधक / Chief Manager

श्रीमती भारती
Smt. Bharati
प्रबंधक / Manager

पंजाब एण्ड सिंध बैंक गृह पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स
ए 33/2, साइट–4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया,
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
फोन नं. : 98112 69844
ई–मेलः jainaoffsetprinters@gmail.com

विषयसूची/Index

1.	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2.	शुभकामनाएं एवं सुझाव	2
3.	संपादकीय	3
4.	Mou signed with Assam Rifles	4
5.	The Auditor's Journey: Balancing Knowledge,Vigilance and Integrity	5
6.	Harvesting opportunities: agriculture infrastructure fund scheme is shaping agri-future	6 - 8
7.	आंचलिक निरीक्षणालयों की विशेष कार्यशाला	9
8.	Artificial intelligence in the Banking Sector: Transforming Financial Services	10 -13
9.	हमें इन पर गर्व है	14
10.	दिसंबर,2024 को समाप्त तिमाही हेतु बैंक के वित्तीय परिणाम	15
11.	दिनांक 31.12.2021 तक बैंक के आंचलिक कार्यालयों का कार्य प्रदर्शन	16 - 17
12.	Customer meet organised by zonal office Jaipur	18
13.	सार्वजनिक डिजिटल बुनियादी ढांचा और जन-जीवन	19 - 20
14.	बैंक के बढ़ते कदम...	21
15.	555वें प्रकाश पर्व का आयोजन	22 - 23
16.	Sri Guru Granth Sahib- The eternal scripture	24 - 25
17.	The Legacy of Dr. Manmohan Singh	26 - 27
18.	Important Circulars of the Bank	28 - 29
19.	जीवन के नवीन अध्याय का आरंभ	30 - 31
20.	Poetry: The Inner soul	32
21.	आंचलिक कार्यालय बरेली में समीक्षा बैठक का आयोजन	33
22.	नवीनतम तकनीक एवं डिजिटल बैंकिंग	34 - 36
23.	आंचलिक कार्यालय कोलकाता में समीक्षा बैठक का आयोजन	37
24.	आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम में समीक्षा बैठक का आयोजन	38
25.	आंचलिक कार्यालय देहरादून में समीक्षा बैठक का आयोजन	39
26.	आंचलिक कार्यालय फरीदकोट एवं होशियारपुर में समीक्षा बैठक का आयोजन	40
27.	भारतीय बैंकिंग - दशा और दिशा	41 - 44

शुभकामनाएं एवं सुझाव / Letter to the Editor

हमें आपकी तिमाही हाउस जर्नल नवोदय का सितंबर, 2024 अंक प्राप्त करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हाउस जर्नल नवोदय के इस अंक में रोचक, जीवंत और जीवन के व्यवहारिक पक्षों के विषयों को समायोजित किया गया है। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित "वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) चुनौतिया एवं अवसर", समय का प्रवाहः एक बहता हुआ उपहार तथा जीवन में रिश्तों का महत्व विषय पर लिखे गए निबंध अत्यंत पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी
मुख्य प्रबंधक(राजभाषा)
यूको बैंक, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग

हमारे कार्यालय को सितंबर तिमाही की नवोदय पत्रिका प्राप्त हुई है। सर्वप्रथम तो संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को बधाई जिनके प्रयास से इतनी उच्च स्तरीय पत्रिका प्रकाशित हो पाई। पत्रिका में बैंक की उपलब्धियां, स्वतंत्रता दिवस समेत अन्य गतिविधियों की सूचना, बैंकिंग एवं अर्थव्यवस्था संबंधी आलेख तथा सभी अंचलों के कार्य प्रदर्शन की जानकारी आदि इस पत्रिका को हमसभी के लिए अत्यंत रोचक एवं पठनीय बनाते हैं । 'साइबर अपराध एवं डिजिटल लेन-देन' से संबंधित आलेख 'भारतीय अर्थव्यवस्था का वर्तमान और भविष्य' को आलोकित करते हैं। इस पत्रिका में बैंकिग क्षेत्र में तकनीक सुरक्षा पर गंभीर बात की गई है। कुल मिलाकर पत्रिका रोचकता एवं ज्ञान का अद्भुत संगम सी प्रतीत हो रही है।

आशीष रंजन
आंचलिक प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय फरीदकोट

नवोदय का सितंबर अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री उपयोगी और सूचनाप्रद हैं। बैंक में आयोजित विभिन्न गतिविधियां और महत्पूर्ण परिपत्रों से कर्मचारियों की जानकारी बढ़ेगी। सभी आलेख पठनीय और समसामयिक लगे। 'Money and wealth' लेख से दोनों के बीच के अंतर को समझने में मदद मिलती है। आज का व्यवसाय प्रबंधन, बैंकिंग उद्योग की चुनौतियां एवं निवारण, RBI's Latest Guidelines on wilful Default and wilfut Defaulter और Cyber Crime: A Hole in the boat of banking industry and the way forward जैसे लेख बैंकिंग परिवेश में घटित हो रहे नित्य बदलावों से अवगत कराते है। संपादक मंडल द्वारा किए गए परिश्रम के लिए बहुत बहुत बधाई। नव वर्ष की शुभकामनाएं।

राकेश चंद्र नारायण
भूतपूर्व महाप्रबंधक

हमें बैंक की तिमाही गृह पत्रिका का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद! पत्रिका के सभी सुधी लेखकों ने अपने-अपने अनुभवों को रुचिपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया है। पत्रिका में प्रकाशित कविता एवं आलेख अत्यंत सारगर्भित हैं। 'बैंकिंग उद्योग की चुनौतियां एवं निवारण' तथा 'डिजिटल लेन-देन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव' इसके साथ ही 'चीन में बढ़ते आर्थिक संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव' आलेख समसामयिक मुद्दों को उजागर करने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी हैं। आशा है कि पत्रिका का आगामी अंक पुनः नवीन एवं जानकारीप्रद विषयों के साथ प्रकाशित होगा। आपके संपादक मंडल को आभार एवं शुभकामनाएं!

राजीव बंसल
आंचलिक प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, चैन्नई

संपादकीय

प्रिय साथियो,

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं! आशा है यह नव वर्ष आपके जीवन में नवीनता का संचार करेगा। नवीनता हमें जीवन को नई दिशा की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है। जीवन में नवीनता का अर्थ है नए विचारों को तलाशना और जीवन में अवसरों की तलाश करना। हमें स्वयं को रोकना नहीं है, अपितु अपने तथा अपनी संस्था के विकास के लिए इसी नवीनता को सदैव बनाए रखना है और उदासीनता को जीवन से बाहर धकेल देना हैं। बैंकिंग में यही नवीनता तकनीकी नवाचार को अपनाकर तथा नित नई राहों का अन्वेषण कर अपनी कार्यकुशलता को प्रभावोत्पादक बनाना है। तकनीकी नवाचार ने न केवल हमारे जीवन को सुलभ बनाया बल्कि हमारे कार्यक्षेत्र का विस्तार भी किया है। इसी तकनीकी नवाचार को लेकर हमारा पीएसबी परिवार नित नए प्रयोग कर रहा है जिसमें हम सफल भी हुए हैं। इन नवीन प्रयासों में 'पीएसबी यूनिक' की सबसे महत्वपूर्ण भूमिक रही है। इसके अतिरिक्त अभी हाल ही में हमारे बैंक द्वारा क्यूआर कोड के माध्यम से डिजिटल रूप में 'पीएसबी ई-अपना घर' एवं 'पीएसबी ई-अपना वाहन ऋण' उत्पादों का शुभारंभ किया गया है। बैंक की इस पहल से ग्राहकों के साथ-साथ फील्ड में कार्य करने वाले अधिकारियों के समय की बचत तो होगी ही, साथ ही यह प्रक्रिया को और अधिक सरलता प्रदान भी करेगा। इसलिए आवश्यकता है हम सभी सकारात्मक उर्जा के साथ नए कौशलों का निर्माण करें और इससे स्वयं लाभांवित होने के साथ-साथ अपनी संस्था को भी लाभांवित करें।

मुश्किल है पर इतना भी नहीं, कि तू कर ना सके,
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं, कि तु पा ना सके,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

गृह पत्रिका नवोदय भी इस दिशा में कार्य कर रही है। गृह पत्रिका नवोदय हमारे विचारों और अनुभवों को दूसरों तक जोड़ने का एक साझा प्रयास है। पत्रिका के इस अंक में नवाचार संबंधी लेखों एवं बैंक की पहलों को महत्वपूर्ण रूप से सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं रोचक लेख एवं कार्टून को भी समाहित किया जाता है। इसके अतिरिक्त गृह पत्रिका नवोदय के इस अंक में मुख्य रूप से बैंक में आयोजित विभिन्न गतिविधियों, बैंक के विभिन्न उत्पादों, नीतियों, महत्वपूर्ण परिपत्रों सहित Artificial Intelligence in Banking Sector:Transforming Financial Services, नवीनतम तकनीक एवं डिजिटल बैंकिंग, The Auditor's journey: Balancing Knowledge, Vigilance and Integrity आदि लेख भी समाहित किए गए हैं, जो हमारी जानकारी को पोषित करते हैं। इसलिए आप सभी अपने विचारों को पत्रिका के माध्यम से साझा करते रहें।

मुझे विश्वास है कि आप इसे उपयोगी और सूचनाप्रद पाएंगे। बैंकिंग के विविध पहुलओं को समेटे यह पत्रिका आपको कैसी लगी, इसके अनवरत सुधार की दिशा में आपकी प्रतिक्रिया एवं सुझावों का हमें सदैव इंतजार रहेगा।

(गजराज देवी सिंह ठाकुर)
महाप्रबंधक एवं मुख्य संपादक

MoU signed with Assam Rifles

Our Bank inks an MOU with Assam Rifles for the PSB Gaurav Bachat CAPF Salary Package, in the presence of Shri Swarup Kumar Saha, MD & CEO alongwith Shri Gopal Krishan, General Manager and Major General Jai Singh Bainsla,SM, ADG DGAR. A significant step reaffirming commitment of our Bank towards empowering our Security Forces with enhanced banking facilities and benefits for the Serving/Retired Personnel, Veer Naris & Working Spouses.

The Auditor's Journey: Balancing Knowledge, Vigilance and Integrity

Surender Kumar Shiroha

In the dynamic world of banking, auditors are the unsung custodians of integrity, much like referees ensuring fair play on a football field. But this role demands more than just adherence to rules; it requires a continuous process of self-assessment, learning, and adaptability. The concept of Audit Risk where an auditor's competence or lack thereof can impact the quality of an audit sheds light on a crucial, often overlooked facet of our responsibilities.

Audit risk isn't just theoretical; it manifests in real world scenarios where enthusiasm or procedural adherence may eclipse sound reasoning. Competence in audit, while fundamental, isn't confined to domain knowledge alone. As auditors, we must understand that the outcomes of our audits aren't solely shaped by our expertise but also by the cooperation or lack thereof. At times, lack of co-operation may cloud our objectivity, turning frustration into a perceived risk. This requires us to reflect on our own biases and shortcomings, an 'audit of the self' if auditors will, to mitigate the very risks we are tasked with identifying.

Moreover, the challenge isn't always about incompetence, but often the inadequacy of practical experience in some specialized areas of audit. Many auditors, armed with textbook knowledge, may find themselves not entirely incompetent but perhaps underprepared for the nuances of certain audits. To bridge this gap, introspection is vital, along with a commitment to expanding our practical knowledge base, ensuring that we deliver observations rooted in both theory and practice.

Our work as auditors parallels the ever evolving nature of the banking ecosystem. Staying informed is non-negotiable. Auditors must evolve in tandem with changing

regulations, emerging fraud patterns, and evolving customer behaviours.

The key to staying sharp is deceptively simple: Read, Lead, and Succeed. Reading is the gateway to understanding emerging risks and staying ahead of the curve. Daily news and internal circulars can be more enriching than anything else, offering fresh insights into changing regulatory landscapes and bank policies. Those who read with diligence, lead with confidence, and ultimately succeed in fostering a robust control environment.

The auditor's job is not just identifying risks but constant learning, reflecting and refining his approach. By balancing knowledge with vigilance and integrity, we ensure that we are not merely participants in the game but guardians of its fairness. As we audit the world around us, we must never forget to audit ourselves.

Deputy General Manager
HO Inspection Deptt.

Harvesting Opportunities: Agriculture Infrastructure Fund Scheme is Shaping Agri-Future

Pankaj Kumar

India's agricultural sector, while pivotal to the nation's economy, faces an array of challenges ranging from insufficient infrastructure and inefficient post-harvest management to inadequate storage facilities. Recognizing these hurdles, the Government of India launched the Agriculture Infrastructure Fund (AIF) Scheme in 2020 to address these bottlenecks and drive holistic development in the agricultural value chain. With an ambitious target of providing financial support for the creation of essential infrastructure, the scheme has emerged as a transformative initiative aimed at boosting food security, enhancing productivity, and improving the livelihood of farmers across the country.

UNDERSTANDING THE AGRICULTURE INFRASTRUCTURE FUND (AIF) SCHEME.

The Agriculture Infrastructure Fund (AIF) is a flagship initiative of the Government of India, launched under the Atmanirbhar Bharat Package. The scheme is designed to facilitate the creation of post-harvest infrastructure, cold storage, and other essential infrastructure for agricultural enterprises. The primary objective of AIF is to address the infrastructural deficits in agriculture that hinder the efficiency of the supply chain, storage and processing facilities.

Improved Storage and Warehousing: To reduce post-harvest losses and enable farmers to store their produce for longer periods, securing better prices.

Cold Chain Infrastructure: Ensuring the preservation of perishable products such as fruits, vegetables, and dairy products.

Processing and Value Addition: Creating facilities to process raw agricultural commodities into finished products, enhancing value and increasing farmer income.

Market Linkages: Strengthening connections between farmers and markets, helping them access fair prices for their produce.

KEY FEATURES OF THE AGRICULTURE INFRASTRUCTURE FUND SCHEME

Financial Support: The AIF offers a financial corpus of ₹1 lakh crore, which is disbursed through loans with a tenure of up to 7 years. The interest subvention is available for the first two years, making it a highly attractive option for both private and public players in the agricultural sector.

Interest Subvention: The Scheme offers 3% interest subvention for loans up to ₹2 crore. Additionally, there is a credit guarantee for loans up to ₹2 crore, making the financial support less risky and more accessible for the stakeholders.

Flexibility and Ease of Implementation: One of the key highlights of AIF is its flexibility. The loan repayment terms are designed to suit agricultural timelines, with grace periods and long repayment windows to ensure that beneficiaries can manage the capital effectively.

HOW THE AGRICULTURE INFRASTRUCTURE FUND SUPPORTS AGRICULTURAL GROWTH

Boosting Farmer Income: By enabling farmers to create storage and processing facilities, the AIF scheme ensures that farmers do not need to sell their produce in distress at low prices. This, in turn, helps stabilize their income and empowers them to take a more market-driven approach.

Reducing Post-Harvest Losses: India faces high post-harvest losses. The establishment of cold storage units, warehouses, and processing units directly addresses this issue, preserving the quality and quantity of agricultural produce for longer periods. This infrastructure allows for better price realization when supply meets demand.

Promoting Modernization and Technological Integration: The scheme encourages the adoption of modern technologies in agriculture, such as automated grading, packaging systems, and cold chain logistics. By infusing capital into these technologies, the scheme drives efficiency, enhances productivity, and prepares the sector for future challenges.

Enhanced Market Linkages: With improved infrastructure, farmers can access national and global markets, thereby expanding their market reach. The creation of storage and processing facilities in strategic locations also reduces the dependency on middlemen, providing better price realizations for producers.

Sustainable Agriculture Practices: The AIF scheme supports the development of sustainable agriculture practices by promoting eco-friendly storage and processing solutions. For example, the development of solar-powered cold storage facilities not only reduces costs but also lowers the carbon footprint of the agricultural sector.

THE ROLE OF FINANCIAL INSTITUTIONS IN THE SUCCESS OF AIF

The implementation of the Agriculture Infrastructure Fund Scheme hinges significantly on the role of financial institutions. Banks and other lending institutions are pivotal in ensuring that the right stakeholders are aware of and have access to the scheme's benefits. Here's how banks and financial institutions can actively contribute:

Loan Disbursement: Banks play a crucial role in the timely disbursement of loans under the scheme. They must ensure that the application process is simple and transparent and that loan applications from eligible entities are processed swiftly.

Awareness and Outreach: Many farmers and rural enterprises may not be fully aware of the benefits the AIF scheme offers. Banks, particularly those with an extensive rural footprint, can serve as a bridge to enhance awareness and help stakeholders tap into the available financial support.

Partnership with State Governments and FPOs: Financial institutions can collaborate with state governments, farmer groups, and producer organizations to create joint ventures, fostering greater investment in infrastructure projects.

Training and Capacity Building: Banks can offer training programs for rural entrepreneurs and farmers to help them understand the financial and technical aspects of setting up agricultural infrastructure. This will also improve their ability to repay loans effectively, thus ensuring the sustainability of the scheme.

THE IMPACT

In last 4 years, since inception of AIF, a sum of ₹51783 crores have been sanctioned by the Banks for 85,314 Agri Infra projects with total investment flow of ₹85,208 crores in improving the farm gate infrastructure which is stupendous progress.

The Agriculture Infrastructure Fund is, thus, a transformative initiative aimed at addressing systemic inefficiencies in the Indian agricultural sector. By emphasizing post-harvest management, value addition, and secondary processing, it not only ensures higher incomes for farmers but also creates a resilient and sustainable supply chain. However, its success hinges on effective implementation, seamless integration of projects, and active participation from all stakeholders.

AIF can play a pivotal role in achieving the vision of Atmanirbhar Bharat and securing a prosperous future for Indian farmers. The Agri Infrastructure Fund Scheme is not just a financial initiative; it is a vision for the future of agriculture in India. It recognizes that the key to transforming the sector lies in developing infrastructure that enhances the productivity, sustainability and profitability of farmers. With continued investment in infrastructure, we can look forward to a future where Indian agriculture is more competitive on the global stage and where farmers have the tools they need to thrive.

At **Punjab and Sind Bank,** we remain committed to supporting the Agri Infra Fund Scheme, empowering farmers, agribusinesses and rural communities to build a prosperous and sustainable agricultural future.

Senior Manager
HO Priority Sector Department

विशेष कार्यशाला

प्रधान कार्यालय निरीक्षण एवं अंकेक्षण विभाग द्वारा समस्त आंचलिक निरीक्षणालयों (ZI) के लिए स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, रोहिणी में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण *"Read, Lead and Succeed"* की थीम पर आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा तथा कार्यपालक निदेशक श्री राजीव समेत अन्य कई उच्चाधिकारियों ने सहभागिता की। यह बैंक द्वारा आयोजित प्रथम ऐसा प्रशिक्षण कार्यक्रम था जिसमें समस्त आंचलिक निरीक्षणालयों के अधिकारी उपस्थित रहें।

Artificial Intelligence in the Banking Sector: Transforming Financial Services

Simran Kaur Arora

Artificial intelligence (AI) has transformed multiple industries, and banking is no exception. With the rapid adoption of digital technologies, the banking sector is increasingly harnessing AI to drive efficiency, improve customer experiences, and enhance security. From AI-powered chatbots and fraud detection systems to predictive analytics and personalized financial solutions, AI is shaping the future of banking. This essay explores the diverse applications of AI in banking, its benefits, challenges, and its role in shaping the future of financial services.

1. AI-Driven Customer Service and Personalization

One of the most prominent uses of AI in banking is enhancing customer service. Banks are adopting AI technologies to provide faster, more efficient, and personalized customer support, addressing queries 24/7 without human intervention. Key examples include:

Chatbots and Virtual Assistants

AI-powered chatbots, such as Bank of America's "Erica" and Capital One's "Eno," have revolutionized customer service by providing assistance around the clock. These chatbots can handle a wide range of customer queries, from account balances and recent transactions to bill payments and transaction categorization. They leverage natural language processing (NLP) and machine learning to understand customer queries and respond intelligently, often emulating a human conversation.

The use of virtual assistants significantly reduces wait times for customers, especially for routine inquiries. As these systems learn from customer interactions, they become increasingly capable of handling complex inquiries, reducing the workload on customer service teams and enhancing overall customer satisfaction.

Personalized Banking Services

AI-driven personalization is reshaping how banks approach customer service by creating tailored experiences for each user. Machine learning algorithms analyze customer data, including spending patterns, transaction history, and account behavior, to provide insights that help customers manage their finances better. For example, AI can suggest budgeting tips, recommend savings plans, and offer timely financial advice tailored to individual circumstances.

In this way, banks can foster stronger customer relationships, increasing loyalty and satisfaction while also cross-selling and upselling products more effectively.

2. Fraud Detection and Risk Management

Fraud detection and risk management are critical areas where AI has had a substantial impact. With the rise in digital transactions, detecting and preventing fraud has become more challenging, requiring a level of speed and accuracy that traditional systems struggle to achieve.

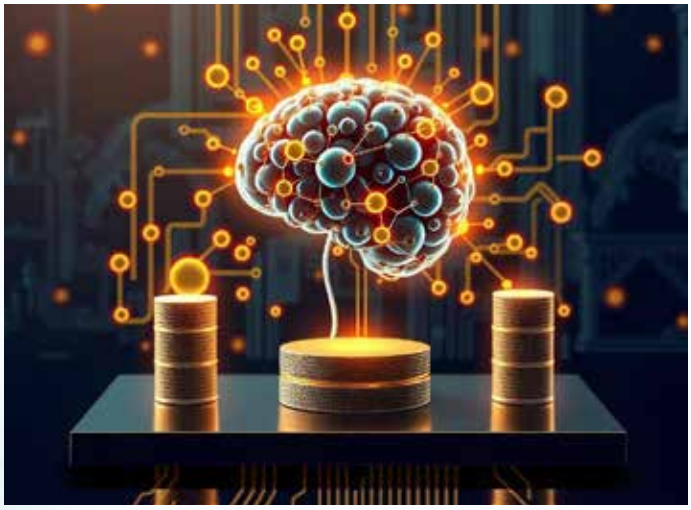

Real-time Fraud Detection

AI systems are capable of monitoring millions of transactions in real-time, identifying unusual patterns that may indicate fraudulent activities. For instance, if a customer's account shows a sudden, large transaction from a location far from their usual area, the AI system can flag this as suspicious and initiate additional verification. Machine learning models, including supervised and unsupervised learning techniques, allow these systems to adapt continuously, refining their accuracy by analyzing large datasets of normal and fraudulent behaviors.

AI's ability to detect fraud in real-time helps banks prevent financial losses, protect customers' accounts, and maintain trust in digital banking.

Risk Assessment

AI's impact extends to credit risk assessment and loan underwriting. Traditionally, risk assessment was based on limited historical data, and decisions were influenced by human biases. With AI, banks can analyze vast amounts of data—ranging from credit histories and transaction data to social media and non-traditional data sources. This holistic view enables more accurate assessments of creditworthiness, ensuring that loans are granted based on comprehensive data rather than limited criteria.

AI algorithms can also analyze trends and correlations that humans may overlook, such as economic conditions or changes in customer behavior, to proactively manage risk. This enhances the bank's ability to maintain a healthy loan portfolio and minimize potential losses.

3. Credit Decisions and Loan Underwriting

The lending process is traditionally a complex and time-consuming one, involving detailed background checks and extensive documentation. AI is transforming this area by streamlining credit decisions and loan underwriting, allowing banks to process loan applications quickly and accurately.

Automated Loan Processing

AI and machine learning algorithms expedite loan approval processes by automating the analysis of applicant data, credit histories, income, and other relevant factors. This reduces the time it takes to approve a loan from days or weeks to mere hours, enhancing customer satisfaction and giving banks a competitive edge.

Machine learning models are less susceptible to the biases that sometimes affect human decision-making. By using objective criteria, AI enables fairer lending practices, ensuring that decisions are made based on data rather than personal judgments.

4. Predictive Analytics and Financial Forecasting

Predictive analytics is another area where AI plays a transformative role, helping banks make informed decisions and prepare for potential risks.

Market Trends and Investment Insights

AI algorithms can analyze large volumes of data to predict market trends, helping banks and financial institutions make data-driven investment decisions. Predictive models can analyze data from multiple sources, including stock market trends, economic indicators, and geopolitical factors, to assess potential investment opportunities and risks.

Customer Behaviour Prediction

AI can predict customer behaviour, helping banks identify which customers might be at risk of leaving for a competitor. By analyzing data such as transaction history, customer interactions, and feedback, AI systems can provide insights that help banks proactively improve customer retention through targeted offers, promotions, and personalized services.

5. Regulatory Compliance and Data Security

As banks embrace digital transformation, the regulatory landscape becomes more complex, with a strong emphasis on data privacy, transparency, and security. AI helps banks navigate these challenges efficiently.

Automated Compliance Monitoring

AI-driven compliance monitoring systems can track and analyze vast amounts of data, ensuring banks adhere to regulatory requirements. For instance, AI systems can monitor transactions for signs of money laundering or other financial crimes, automatically flagging suspicious activities and ensuring compliance with anti-money laundering (AML) and know-your-customer (KYC) regulations.

Enhanced Cybersecurity

Data security is a top priority in banking, and AI enhances cybersecurity measures by detecting threats early. AI systems monitor network activities, detect anomalies, and identify potential cyber threats before they escalate. By continuously learning from new threats, AI systems adapt to evolving security challenges, protecting both customer data and bank operations.

6. Process Automation and Operational Efficiency

AI-powered robotic process automation (RPA) helps banks streamline routine tasks, increasing efficiency, reducing costs, and enabling staff to focus on higher-value activities.

Robotic Process Automation (RPA)

RPA automates repetitive tasks such as data entry, account maintenance, and report generation. By automating these functions, banks can reduce human error, speed up processes, and lower operational costs. For example, RPA can be used to streamline customer onboarding, verify documents, and handle compliance checks.

7. Investment and Wealth Management

AI is revolutionizing wealth management and investment advisory, making it accessible and personalized for a broader range of customers.

Robo-Advisors

AI-powered robo-advisors provide investment recommendations based on individual financial goals, risk tolerance, and market trends. They offer lower fees than traditional wealth managers, making investment advisory services accessible to a wider range of clients.

Robo-advisors analyze data from multiple sources to create optimized portfolios, helping customers make well-informed investment decisions. These systems not only democratize wealth management but also free up human advisors to focus on high-net-worth clients with complex financial needs.

Algorithmic Trading

Algorithmic trading, driven by AI, uses algorithms to execute trades at optimal times based on real-time data. AI algorithms assess vast datasets to identify opportunities for profitable trades, maximizing returns while minimizing risks. Large financial institutions use these algorithms to increase trading efficiency, gaining a competitive advantage in the market.

Challenges of AI in Banking

While AI offers numerous advantages, its integration into banking also presents several challenges that need to be addressed.

Privacy and Ethical Concerns

AI systems rely on vast amounts of data to function effectively. However, data privacy concerns arise as AI analyzes sensitive information. Banks must ensure transparency regarding data usage, comply with regulations, and protect customer privacy. Ethical concerns also arise in AI-based decision-making, as biases in algorithms can lead to discriminatory practices. Ensuring that AI algorithms are fair and unbiased is essential to maintain customer trust and regulatory compliance.

Integration and Cost

Implementing AI requires significant investment in technology, infrastructure, and training. The high cost of AI solutions can be a barrier for smaller banks, making it challenging for them to compete with larger institutions. Additionally, integrating AI into existing systems is often complex and time-consuming, requiring a strategic approach to ensure smooth adoption.

Dependence on Data Quality

The effectiveness of AI systems depends on the quality of the data they analyze. Poor-quality data can lead to inaccurate predictions, biased decisions, and poor customer experiences. Ensuring data accuracy, consistency, and completeness is crucial for banks to maximize the benefits of AI.

Future of AI in Banking

The future of AI in banking holds immense potential, with several trends expected to shape the industry.

Advanced Natural Language Processing (NLP)

Future advancements in NLP will enhance the capabilities of chatbots and virtual assistants, making them more conversational and capable of understanding complex queries. This will improve the quality of customer interactions, allowing banks to offer more sophisticated self-service options.

Improved Fraud Detection Models

As AI continues to evolve, fraud detection models will become more accurate, enabling banks to detect even subtle signs of fraud. By leveraging machine learning and behavioral analysis, banks can stay ahead of fraudsters and protect customer assets effectively.

Increased Personalization

The future of banking will be highly personalized, with AI enabling banks to offer products and services tailored to individual customer needs. Advanced analytics and real-time data processing will allow banks to create personalized financial journeys for customers, fostering stronger relationships and enhancing customer loyalty.

CONCLUSION

AI is transforming the banking sector, bringing efficiency, security, and personalization to new heights. From improving customer service and fraud detection to enhancing investment and wealth management, AI is reshaping banking in numerous ways. Despite challenges related to privacy, ethics, and data quality, the potential

Manager
HO Premises Department

हमें इन पर गर्व है

श्रीअरुण सिंगला पिछले पाँच वर्षों से अपने बैंक में अधिकारी के रूप में मानसा शाखा में कार्यरत हैं । वर्षों के संघर्ष एवं शारीरिक कठिनाइयों के बावजूद अपनी काबिलियत पर उन्हें अपने सपनों को पूरा करने का मौका मिला। उनके अथक प्रयासों से उन्हें सदी के महानायक श्री अभिताभ बच्चन के साथ "कौन बनेगा करोड़पति" के खेल में भाग लेने का मौका मिला। "कौन बनेगा करोड़पति" जैसे लोकप्रिय खेल में न केवल अपनी प्रतिभा से उन्होंने उच्च राशि प्राप्त की बल्कि अपने खुशनुमा व्यवहार से उपहार के रूप में श्री अभिताभ बच्चन की ओर से पर्फ्यूम भी भेंट स्वरूप प्राप्त किया, जो श्री अरुण सिंगला जी के लिए एक अमूल्य भेंट हैं। केबीसी के माध्यम से उन्होंने अपने परिवार के साथ-साथ अपने कार्यस्थल अर्थात पंजाब एण्ड सिंध बैंक को भी गौरवांवित किया है। पूरा पीएसबी परिवार उन्हें शुभकामनाएं एवं बधाई देता है !

सुश्री पलक चोपड़ा, वरिष्ठ प्रबंधक, एफजीएम, चंडीगढ़, कार्यालय में कार्यरत हैं। इनके द्वारा बैंकर्स क्लब चंडीगढ़ का लोगो तैयार किया गया। इस संबंध में उन्हें भारतीय रिज़र्व बैंक के क्षेत्रीय निदेशक एवं मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड द्वारा पुरस्कृत किया गया।

दिसंबर 2024 को समाप्त तिमाही हेतु बैंक के वित्तीय परिणाम

राशि करोड़ में

मानक	तृतीय तिमाही वित्तीय वर्ष 2023-24	तृतीय तिमाही वित्तीय वर्ष 2024-25	वार्षिक विकास-दर
परिचालन लाभ (करोड़ में)	277	484	207
शुद्ध लाभ (करोड़ में)	456	703	247
परिसंपत्ति पर प्राप्ति (आरओए) (%)	0.42	0.63	21 बीपीएस
लाभांश (आरओई) (%)	8.54	10.98	244 बीपीएस
अग्रिम-उपज (वाईओए)	8.66	8.87	21 बीपीएस
लागत-आय अनुपात	73.16	64.57	(859) बीपीएस
गैर-ब्याज आय (करोड़ में)	809	891	82
ऋण-जमा अनुपात	70.6	75.25	465 बीपीएस
स्लिपेज अनुपात	0.3	0.34	4 बीपीएस
सकल गैर निष्पादित आस्ति (%)	5.7	3.83	(187) बीपीएस
निवल गैर निष्पादित आस्ति (%)	1.8	1.25	(55) बीपीएस
कुल वसूली एवं उन्नयन (करोड़ में)	948	565	-383
ऋण लागत	(0.40)	0.10	50 बीपीएस
एनआईएम क्यू3	2.54	2.78	24 बीपीएस
कासा जमा	38785	39701	916
कुल जमा	118355	127397	9042
सकल अग्रिम	83559	95870	12311
कुल व्यापार	201914	223267	21353

दिनांकित 31-12-2024 तक

राशि करोड़ में

आंचलिक कार्यालय	कुल जमा (थोक जमा के अलावा)			सकल अग्रिम			कासा जमा (अतिदेय सावधि जमा के अलावा)		
	मार्च 2024	दिसंबर 2024		मार्च 2024	दिसंबर 2024		मार्च 2024	दिसंबर 2024	
		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि
अमृतसर	5741	6582	6171	2077	2292	2109	2472	2813	2642
बरेली	2086	2405	2215	2253	2454	2448	1380	1568	1430
भटिंडा	1997	2306	2209	1651	1809	1662	941	1079	1051
भोपाल	2434	2736	2539	1424	1611	1493	1053	1145	1037
चंडीगढ़	7027	7796	7541	2519	2811	3037	2905	3139	3037
चेन्नई	814	930	1111	3480	3903	3231	322	352	549
देहरादून	3109	3477	3244	1393	1552	1555	1576	1702	1573
दिल्ली - I (सीबीबी के अलावा)	5624	6266	5842	2110	2356	2250	2006	2177	2011
दिल्ली - II	7725	8530	7878	1723	1940	1925	2916	3165	2912
फरीदकोट	3459	3991	3831	1971	2152	2086	1596	1821	1796
गांधीनगर	584	669	594	1159	1285	1134	220	241	225
गुरदासपुर	3877	4456	4168	1569	1713	1571	1759	1998	1847
गुरुग्राम	2424	2715	2553	1872	2131	2067	1130	1224	1114
गुवाहाटी	1738	1953	1464	493	554	546	1037	1126	793
होशियारपुर	3801	4372	4109	1033	1133	1091	1604	1822	1677
जयपुर	1942	2182	2014	2100	2359	2188	900	980	885
जालंधर	6526	7452	6899	1413	1569	1425	2584	2932	2650
कोलकाता	3635	4062	3716	4414	4884	4982	1464	1588	1444
लखनऊ	4058	4535	4235	2788	3087	2963	1924	2083	1943
लुधियाना	4500	5175	4818	2337	2588	2251	2005	2279	2083
मुंबई (सीबीबी के अलावा)	2062	2311	2300	1272	1453	1395	709	771	821
नोएडा	3514	3945	3422	1301	1486	1387	1794	1948	1555
पंचकूला	3404	3931	3601	2152	2358	2169	1532	1740	1633
पटियाला	4036	4643	4407	2518	2730	2501	1521	1727	1684
विजयवाड़ा	1511	1703	1514	8103	8694	6892	629	682	688
सीबीबी दिल्ली	351	391	402	12504	14011	12535	125	142	88
सीबीबी मुंबई	267	299	304	13946	16444	18846	207	229	236
बैंक के कुल आंकड़े	**88244**	**99811**	**93100**	**85964**	**98403**	**95870**	**38313**	**42474**	**39402**

आंचलिक कार्यालयों का कार्य प्रदर्शन

राशि करोड़ में

आंचलिक कार्यालय	खुदरा ऋण			कृषि ऋण			सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम ऋण			गैर निष्पादित आस्तियाँ		
	मार्च 2024	दिसंबर 2024		मार्च 2024	दिसंबर 2024		मार्च 2024	दिसंबर 2024		मार्च 2024	दिसंबर 2024	
		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि
अमृतसर	728	824	800	963	1017	939	385	441	369	182	166	165
बरेली	361	410	368	1298	1369	1441	593	675	637	259	237	253
भटिंडा	361	417	369	1023	1084	995	257	298	289	66	61	75
भोपाल	425	481	437	198	210	215	774	883	806	98	90	96
चंडीगढ़	1228	1380	1413	415	440	382	722	822	763	150	137	141
चेन्नई	651	727	684	20	24	119	530	614	492	105	97	99
देहरादून	502	571	558	420	441	408	426	488	519	112	103	97
दिल्ली - I (सीबीबी के अलावा)	790	885	882	132	138	47	948	1072	1151	168	161	114
दिल्ली - II	928	1041	1007	82	88	93	626	716	716	46	42	44
फरीदकोट	382	440	428	1283	1358	1343	307	354	314	98	90	94
गांधीनगर	253	286	313	108	113	81	355	404	383	70	63	68
गुरदासपुर	410	462	446	736	774	696	384	437	394	163	148	155
गुरुग्राम	807	907	905	213	225	217	546	626	506	96	88	87
गुवाहाटी	250	278	294	23	24	15	220	251	237	22	20	24
होशियारपुर	287	325	349	573	609	539	172	199	203	74	68	70
जयपुर	680	768	756	778	821	734	636	733	666	157	144	157
जालंधर	556	629	583	349	367	328	412	477	426	101	92	89
कोलकाता	840	945	838	152	161	196	1047	1175	1128	345	319	372
लखनऊ	896	1007	931	272	288	249	1058	1189	1007	249	230	244
लुधियाना	527	603	545	646	684	631	699	805	662	196	181	166
मुंबई (सीबीबी के अलावा)	667	764	685	41	44	83	424	498	431	86	78	95
नोएडा	754	852	809	185	195	200	361	420	377	86	80	66
पंचकूला	650	734	657	803	850	782	425	492	466	146	135	144
पटियाला	582	654	624	1154	1221	1069	420	487	505	101	92	99
विजयवाड़ा	640	720	715	69	73	90	427	489	490	80	73	70
सीबीबी दिल्ली	34	42	36	18	19	18	214	239	164	11	2	1
सीबीबी मुंबई	2	8	3	69	70	988	287	363	352	0.03	0	0
बैंक के कुल आंकड़े	**16034**	**18809**	**20680**	**12523**	**13207**	**12897**	**15909**	**19445**	**18389**	**4665**	**4198**	**3676**

Zonal Office Jaipur Organised MSME Customer Meet in the presence of Shri Gopal Krishan, General Manager.

सार्वजनिक डिजिटल बुनियादी ढांचा और जन जीवन

शिरीष पाण्डेय

भारत आजादी के बाद से बुनियादी ढांचे जैसे पानी, बिजली और सड़क को मजबूत करने हेतु प्रयासरत रहा है, मगर कोरोना (कॉविड-19) महामारी के बाद से डिजिटल बुनियादी ढांचा अधिक महत्वपूर्ण रूप में उभरा है। विभिन्न शोधों के अनुसार भारत में इंटरनेट वर्ष 1995 के आस पास आम-जन के लिए सुलभ हुआ और तबसे लेकर वर्ष 2020 तक इसके लगभग 718.74 मिलियन सक्रिय उपयोगकर्ता थे। भारत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ब्लॉकचैन, स्मार्ट सिटीज और स्मार्ट हेल्थ जैसे लक्ष्यों की दिशा में लगातार काम कर रही है। ऐसे में देश के लिए अपने डिजिटल बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करना महत्वपूर्ण है, ताकि आर्थिक विकास में तकनीक का प्रभावी ढंग से प्रयोग किया जा सके।

डिजिटल इंडिया अभियान:- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 1 जुलाई 2015 को इस अभियान को शुरू किया। इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण जीवन, ग्रामीण भारत को हाई स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी की मदद से जोड़ना है। भारत सरकार द्वारा यह अभियान नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से, डिजिटल रूप से सरकारी सेवाएं आसानी से उपलब्ध कराना था। अतः देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए इस अभियान को शुरू किया गया ।

डिजिटल बुनियादी ढांचे हेतु की गई महत्वपूर्ण पहल :-

1. **आधार** - यूआईडीएआई (UIDAI- unique identification authority of India) के माध्यम से विशिष्ट संख्या वाली पहचान को बनाने के लिए योजना आयोग ने 28 जनवरी 2009 को लागू किया एवं आधार कार्ड को प्रायोगिक तौर पर महाराष्ट्र के कुछ ग्रामीण इलाकों में लॉन्च किया। यह एक डिजिटल पहचान के रूप में कार्य करता है एवं व्यक्तियों को प्रमाणित करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। यह 12 अंकों की पहचान संख्या प्रदान करता है ।

2. **डिजिलॉकर** - भारत सरकार द्वारा डिजिलॉकर एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है जिसमें उपयोगकर्ता अपने महत्वपूर्ण दस्तावेजों जैसे कि आधार कार्ड, पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस आदि को डिजिटल रूप में संग्रहित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त वे दस्तावेजों पर डिजिटल हस्ताक्षर कर सकते हैं। डिजिटल लॉकर सुविधाजनक है। उपयोगकर्ता दस्तावेजों को कहीं से भी एक्सेस कर सकते हैं एवं सुरक्षित रूप से वह पेपर लेस लेनदेन को बढ़ावा देता है ।

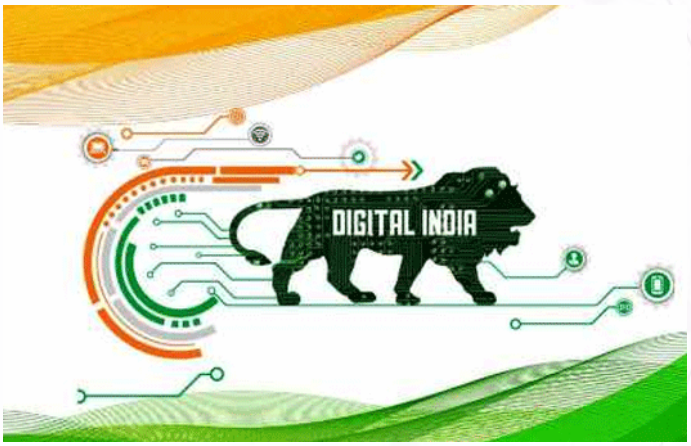

3. **डीजी यात्रा** - यह भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक डिजिटल यात्रा प्लेटफार्म है, जो कि यात्रियों को हवाई अड्डे पर सुरक्षा और इमीग्रेशन प्रक्रियाओं को डिजिटल रूप से पूरा करने की अनुमति देता है । यात्री बायोमैट्रिक डाटा का उपयोग करके प्रमाणित कर सकते हैं एवं फोन पर डिजिटल बोर्डिंग पास प्राप्त कर सकते हैं ।

4. **भीम एवं यूपीआई** - भीम एवं यूपीआई (भारत इंटरफेस फॉर मनी) मोबाइल भुगतान एप है। यह यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट इंटरफ्रेंस) पर आधारित है एवं मोबाइल नंबर आधारित भुगतान की अनुमति देता है। यूपीआई एक मोबाइल भुगतान प्रणाली है जो मोबाइल डिवाइस का उपयोग करके बैंक खातों के बीच तत्काल धन लेने- देने को सक्षम बनाती है ।

5. **आरोग्य सेतु एवं कोविन-** आरोग्यसेतु उपयोगकर्ताओं को उनके क्षेत्र में कोविड-19 मामलों की संख्या के बारे में वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करता है एवं उन्हें सचेत करता है कि वह ऐसे किसी व्यक्ति के निकट न रहे हैं जो कोरोना पॉजिटिव है। कोविन भारत सरकार द्वारा संचालित ऐप है जो कि नागरिकों के लिए कॉविड-19 टीकाकरण अपॉइंटमेंट में पंजीकरण और शेड्यूलिंग की सुविधा के लिए विकसित ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है ।

6. **डिजिटल एप्स** - भारत सरकार ने डिजिटल एप्स- MY GOV,UIDAI ने आधार निर्माण, BHIM के अंतर्गत यूपीआई एप जैसे phonepe, google pay, Paytm आदि एप डिजिलॉकर, आरोग्य सेतु, कोविन, डिजी यात्रा, उमंग (UMANG),फसल बीमा,

ई-हॉस्पिटल एप, ई-श्रमिक एप आदि एवं डिजिटल योजनाएं:- PMGDISHA, डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस ई-क्रांति, ई-हॉस्पिटल, आंगनवाड़ी में भी बच्चों की जानकारी ट्रैक करने के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को सरकार द्वारा "पोषण ऐप" इंस्टॉल करने का आदेश दिया गया है। बैंक के सभी कार्य डिजिटल हो चुके हैं एवं बैंकों के स्वयं के एप है जिससे बैंकिंग आसान हो गई है। डाक विभाग में अब कागजी कार्य की जगह डीटीआर (DTR-DAILY TRANSACTION REPORT) एवं खाता खोलने, ग्राहकों की जानकारी, लेन-देन एवं आईपीपीबी (इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक) के खाते अंगुलियों के निशान से मोबाइल से डिजिटल खोले जाते हैं। पेंशन की सुविधा, जीवन प्रमाण सर्टिफिकेट नवीकरण करने की सुविधा भी डिजिटल तरीके से घर-घर जाकर बुजुर्गों को अंगुलियों के निशान द्वारा लगाकर कार्य पूर्ण करने की सुविधा मिलती है ।

डिजिटल संरचना के लिए डेटा संरक्षण पहल:-

- सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000
- व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेय, 2019
- आधार अधिनियम, 2016
- व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक, 2019
- राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति, 2013

सार्वजनिक डिजिटल बुनियादी ढांचे के लाभ :-

- **आर्थिक लाभ:-** डिजिटल बुनियादी ढांचे से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है, नौकरी के नए अवसर पैदा होते हैं, डिजिटल बुनियादी ढांचे से व्यापार करना आसान हो जाता है।
- **सामाजिक लाभ:-** डिजिटल बुनियादी ढांचे से शिक्षा की सुविधा बढ़ जाती है स्वास्थ्य सेवाओं की सुविधा बढ़ जाती है, एवं सामाजिक संपर्क की सुविधा बढ़ जाती है ।
- **तकनीकी लाभ:-** डिजिटल बुनियादी ढांचे से डाटा की सुरक्षा बढ़ जाती है, तकनीकी सुविधा बढ़ जाती है एवं संचार की सुविधा बढ़ जाती है ।
- **पर्यावरण को लाभ:-** डिजिटल बुनियादी ढांचे से कागज की बचत होती है एवं ऊर्जा की बचत होती है।

डिजिटल बुनियादी ढांचे की चुनौतियां:-

- **तकनीकी चुनौतियां:-** डिजिटल बुनियादी ढांचे में साइबर सुरक्षा बड़ी चुनौती है। तकनीकी विफलता एवं इंटरनेट कनेक्टिविटी से जुड़ने में कठिनाई , सर्वर व नेटवर्क समस्या बड़ी चुनौती है।
- **आर्थिक चुनौतियां:-** डिजिटल बुनियादी ढांचे की स्थापना और रखरखाव की लागत, निवेश, आर्थिक असमानता सरकार को इन योजनाओं के बजट की कमी का सामना करना पड़ सकता है।
- **गोपनीयता और सुरक्षा चुनौतियां:-** डिजिटल सार्वजनिक एवं संरचना में बड़ी मात्रा में संवेदनशील डाटा का संग्रह भंडारण और उपयोग शामिल है जिससे गोपनीयता और सुरक्षा उल्लंघन का जोखिम बढ़ जाता है ।

डिजिटल बुनियादी ढांचे को सशक्त बनाने के लिए रास्ते

- सरकार को डिजिटल सिस्टम को खतरे से बचाने के लिए साइबर सुरक्षा उपायों में निवेश करने की आवश्यकता है । साइबर खतरों से निपटने के लिए डाटा संरक्षण, साइबर अपराध और सूचना सुरक्षा पर प्रोटोकॉल विकसित करना और ऑडिट लागू करना शामिल है ।
- इंटरनेट कनेक्टिविटी में सुधार, डाटा सेंटर बनाना ताकि अधिकतम आबादी तक पहुंचाने के लिए पूरे देश में डिजिटल विस्तार करने की आवश्यकता है। 5G, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी तकनीक है जिसके जरिए मशीनी मानव जैसी तर्क शक्ति और निर्णय लेने की क्षमता रखती है । एआई के उदाहरण है:- चेकर्स, शतरंज खेलने वाले एप्स, भाषा ट्रांसलेट करने वाले प्रोग्राम, कविता-लेखन या लिखना, छवि को पहचानना या चित्र बनाना।
- ब्लाकचैन टेक्नोलॉजी एक डेटाबेस तकनीक है जिसके जरिए वेबसाइट नेटवर्क में डाटा को पारदर्शी तरीके से साझा किया जा सकता है। ब्लॉकचेन की मदद से आर्डर, भुगतान, खाता लेन- देन की जानकारी को ट्रैक किया जा सकता है ।
- सरकार को सुरक्षित करना होगा कि डिजिटल सेवाएं सभी नागरिकों के लिए सुलभ हो, चाहे उनकी सामाजिक- आर्थिक स्थिति या भौगोलिक स्थिति कुछ भी हो। सैटेलाइट ब्रॉडबैंड जैसी तकनीक इस्तेमाल करके ग्रामीण और दूर दराज के क्षेत्र में इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार करना ।
- डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने के बारे में लोगों को शिक्षित और प्रशिक्षित करने के लिए सामुदायिक केंद्र डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम स्थापित करना होगा।

उपसंहार :- सार्वजनिक डिटेल बुनियादी ढांचा एक महत्वपूर्ण कदम है जो सरकार और नागरिकों के बीच डिजिटल सेवाओं और सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए बनाया गया है । इसके लाभों में सुविधा, पारदर्शिता, जवाबदेही और आर्थिक विकास शामिल है। हालांकि इसकी चुनौतियों में डिजिटल विभाजन, डाटा गोपनीयता की कमी भी शामिल है।

मुख्य प्रबंधक
प्र. का. परिसर विभाग

बैंक के बढ़ते कदम...

बैंक की नवीन शाखा लेह का शुभारंभ

श्री स्वरूप कुमार साहा (प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी), श्री चमन लाल शींहमार (क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़), श्री राकेश कुमार(आंचलिक प्रबंधक, गुरदासपुर) एवं मुख्य अतिथि श्री सफ़र अली, निदेशक, लेखा एवं कोष (भारतीय राजस्व सेवा), लेह द्वारा बैंक की नवीन शाखा लेह का उद्घाटन किया गया।

गुरु नानक देव जी के 555वें प्रकाश पर्व में कीर्तन एवं अरदास तथा लंगर का

के अवसर पर बैंक के प्रधान कार्यालय आयोजन किया गया

Sri Guru Granth Sahib-
The eternal scripture

Dr. Charanjeet Singh

Ever since the tenth Master, Sri Guru Gobind Singh ordained the end of the line of person guru and bestowed the status of the external Guru to the Holy Scripture This had been and shall ever remain the very source of spiritual sustenance for all those who have faith in the Sikh religion. This happened at Naded in 1708 AD before Sri Guru Gobind Singh said farewell to this mortal world and returned to suchkhand- the region of the Truth. Before that in the year 1604, the fifth Guru Sri Guru Arjan Dev had installed at the Harimander sahib-the Golden Temple the Pothi Sahib for the first time, which Later came to be known as Sri Guru Granth Sahib. The fifth Guru had collected the compositions of his four predecessors alongwith those of Sufis, Saints and Bhaktas, had edited and compiled them in one compendium, thus giving the Sikh faith a permanent source of divinity- a secular, complete and comprehensive scripture. Sri Guru Nanak Dev, the founder of the Sikh faith had left his own verses and those collected from various saints and holy men, who shared the basic concepts of monotheism, love for truth and ethics and compassion for the weak and the downtrodden, with his worthy successor Sri Guru Angad Dev. The second Guru and his nominee, the third Guru Sri Guru Amar Das also left their holy works which came in possession of Baba Mohan ji. The compositions of the forth Guru Sri Guru Ram Das being available with Sri Guru Arjun Dev, the latter got hold of all the verses and with the assistance of Bhai Gurdas ji, put all writings in order and compiled them in various Ragas, which has given a unique form to this most wonderful poetical work in the world. Later Sri Guru Gobind Singh added the holy verses of his preceptor father, Sri Guru Tegh Bahadur to the work of the five Gurus and the Sufis, Bhaktas and Bhatt before anointing the scripture as the Eternal Guru.

The non-Guru authors of Sri Guru Granth Sahib include Bhagat Kabir, Bhagat Namdev, Bhagat Ravidaas, Bhagat Trilochan, Bhagat Beni, Bhagat Dhanna, Bhagat Jaidev, Bhagat Sain, Bhagat Pipa, Bhagat Sadhna, Bhagat Rama Nand, Bhagat Parmanand, Bhagat Surdas. The writings of Muslim holy men like sheikh Farid. Bhagat Bhikhan and Mardana are also incorporated, in the Holy Book. Most of the Bhagats, whose Vani is found in Sri Guru Granth Sahib came from the so-called low strata of society For example Kabir was a weaver, Namdev a calico printer, Dhanna a peasant, Sadna a butcher and Sain a barber. Ravidas was a tanner-cobbler, though Pipa was a king and Trilochan was a Brahmin. The emphasis in the Holy Granth throughout is on the brotherhood of mankind.

Bani of Bhatt poets- Kaleh sahaar, Jalap, Keerat, Bhikh, Sall, Bhall, Nall, Gayand, Mathra, Bal, Harbans are also included in the holy granth. Sikh followers also contributed to Sri Guru Granth Sahib as given below; Bhai Mardana ji, Bhai Satta & Balwand, Baba Sundar ji. Guru Gobind Singh ordained that all those who wanted to have communion with the ten Gurus, should seek their message in the Holy Book. The two most remarkable features

of his Scripture are that this has been compiled by a Holy Prophet, Sri Guru Arjan Dev himself and when it is worshipped by the faithful, it is worshipped as one complete entity, meaning thereby that the works of the Bhaktas, sufis and bards are revered with the same devotion as those of the six Gurus, And in this scripture myriad, names of the Almighty have been used such as Ram, Hari, Ishwar, Prabhu, Murari, Damodar, Gopal , Gobind, Girdhari, Shyam, Narain, Madho, Mohan , Keshav, Braham, mukand, Gosain, Kahan, Krishna, Bithal, Goverdhan, Jagannath, Narhari as also Allah, Khuda, Rahim, Parwardigar,Rabb, Maula,Bakshand and many others. Sri Guru Gobind Singh did not include any of his own writings in the Holy Scripture and compiled a separate volume of almost the same size, which incorporates his masterpieces of divine poetry. Only one Shalokas in Sri Guru Granth Sahib is ascribed to the tenth Preceptor. The Ragas in which the Holy Scripture are arranged are 31 in number. They excluded those Ragas which are expressive of unnecessary exuberance or expressive sadness.The Gurus preached the omnipotence and omnipresence of the creator, as he has the power of invest the content of His Will with reality and the whole realm of His existence is constantly sustained by His activity. His spirit pervades all beings. He is the Creator, Preserver and the Destroyer. He manifests Himself through the love He kindles in every heart. His mercy is inexhaustible. He is infinite limitless and He is the Saviour. The Gurus preached, the virtues of truth, contentment, humility and compassion. They also considered women equal to man and disapproved of the evils of infanticide and sati. They raised their voice openly against aggression cruelty and plunders. They never favoured recluseness and abdication of householder's responsibilities. They taught the humility to fulfil their obligations for which they were created by the Almighty, remember Him in every breath and help others who are in need. They preached equality of all human beings and even compassion for all other creatures, who have their own functions. The Guru gave a message of preserving the environment and promoting the verdure. They imparted a scientific outlook through Gurbani and propogated the message of peace and tranquility. Their message contained in the Holy Scripture is immortal, everlasting and everenduring. It is panacea for the suffering humanity as the Gurus beseeched the all-powerful Creator to preserve the burning world-with His Grace and to bless the whole humanity.

Ex. Chief Manager

The Legacy of Dr. Manmohan Singh

Rakesh Chandra Narayan

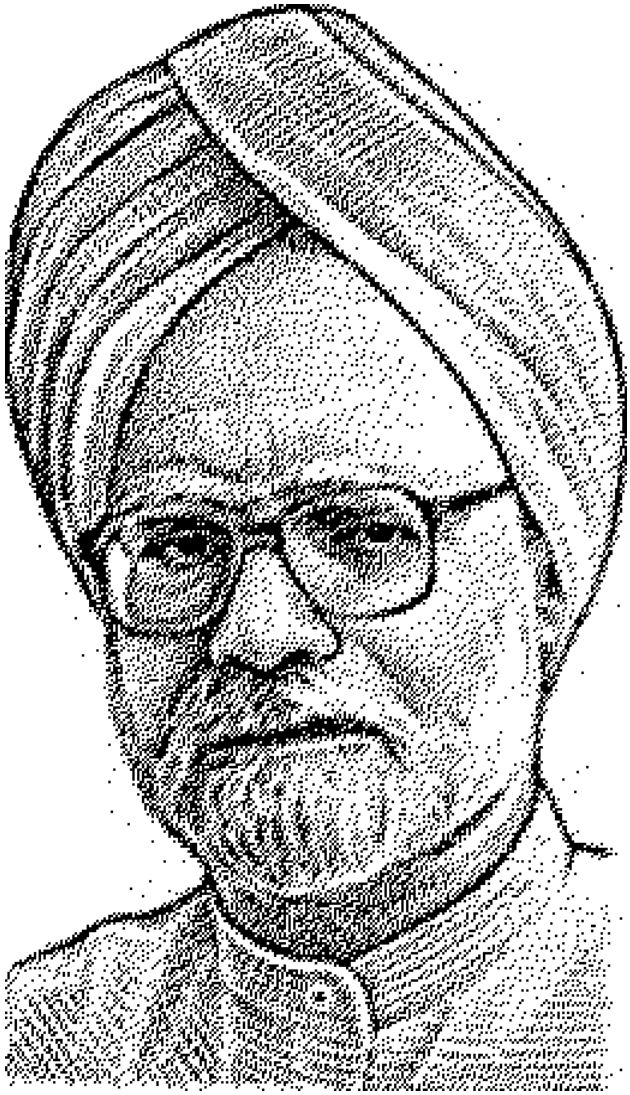

The legacy of Dr. Manmohan Singh lives on in India's strong and affluent middle class and entrepreneurs who dream big. The median age of India's population is approximately 28.8 years, according to the latest data from Worldometer. This indicates that half of the Indian population is older than 28.8 years, while the other half is younger having no lived experience of the appalling scarcity Indians had to put up with before the transformative reforms of 1991.

Dr. Manmohan Singh having full support of the visionary PM PV Narsimha Rao presented the historic Budget on July 2 in 1991 that changed India. It shifted India's economy from protectionism and socialism to liberalisation. The Government introduced numerous significant reforms which dismantled the License Raj, devalued the rupee and then opened India to foreign investments. The policies of Dr. Manmohan Singh were important in averting a sovereign default while absolutely stabilizing an Indian economy which was on the brink of collapse that was marked by a fiscal deficit of 8.5% of the GDP and a balance of payment deficit.

The measures taken at that time fuelled rise of the middle class, a hallmark of successful societies, as was seen in Western Europe after the Industrial Revolution, Japan after the war and South Korea after the 'Miracle of the Han River'. It unleashed the huge reservoir of pent up entrepreneurships.

India saw continuous growth from the year 2004 to the year 2014 when Dr. Manmohan Singh was the Prime Minister of India. His policies were aimed at an inclusive development and social equity. He has been rightly acclaimed as a thinker and a scholar. He will be remembered for his academic approach to work, accessibility, and unassuming demeanour.

Dr. Manmohan Singh's achievements are all the more remarkable given that he was a survivor of the partition. Born on September 26, 1932, in Gah, Punjab, British India (now in Pakistan), his family migrated to India during the partition in 1947. He completed his Matriculation examinations from Punjab University in 1948. He had a distinguished academic journey .

He went to the University of Cambridge, UK, where he earned a First Class Honours degree in Economics in 1957. He did D. Phil in Economics from Nuffield College at Oxford University in

1962. He joined Punjab University as a teacher and later taught in Delhi School of Economics.

His stint with the government began in 1966 when he worked for the United Nations Conference on Trade and Development (UNCTAD). In 1969 he was appointed Advisor to the Ministry of Foreign Trade by Lalit Narayan Mishra. This was soon followed by his appointment as Chief Economic Advisor in the Ministry of Finance in 1972. Over his career, Dr. Singh held several significant positions, including Secretary in the Ministry of Finance, Deputy Chairman of the Planning Commission, Governor of the Reserve Bank of India, Advisor to the Prime Minister and Chairman of the University Grants Commission.

Dr. Manmohan Singh became the Finance Minister of India in 1991, courtesy of Prime Minister P.V. Narasimha Rao. He recognised Singh's expertise as an economist and his potential to drive economic reforms. His legacy as finance Minister laid the foundation for India's emergence as a major economic power. His journey to become India's Prime Minister is a fascinating one. He was famously quoted as saying in parliament during his first budget speech in 1991 that "no power on Earth can stop an idea whose time has come".

He started his first stint as prime minister with some reluctance but he soon stamped his authority on the top job. He is also known as the 'accidental Prime Minister" of India. This label stems from the fact that he became the Prime Minister in 2004, not due to a direct election or a strong personal mandate, but rather as a result of a coalition politics . He was a compromise candidate and went on to serve as Prime Minister for two consecutive terms from 2004 to 2014. His tenure, particularly between 2004 and 2009, saw the country's GDP grow at a healthy average pace of around 8%, the second fastest among major economies.

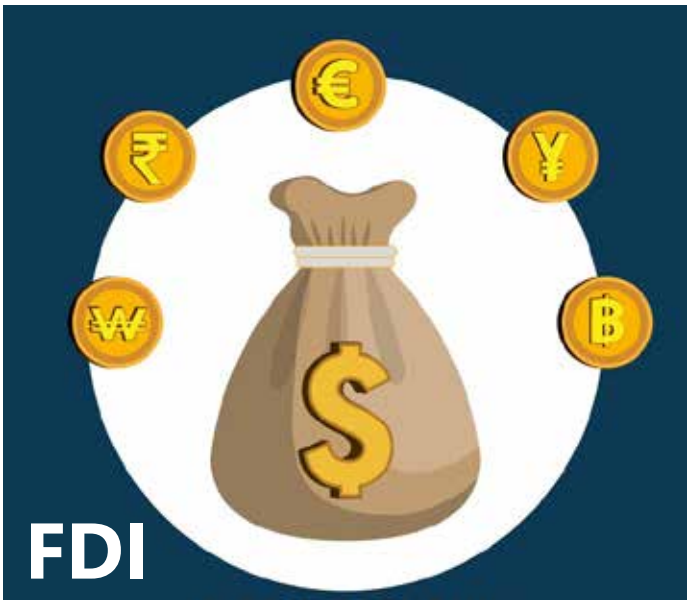

He took bold decisions on reforms and brought more foreign investment into the country. Experts credit him for shielding India from the 2008 global financial crisis.

When he was the PM, coalition politics became the feature of Indian politics and he had to work under the constrains where he had to balance the competing demands and interests of his alliance partners. He had to make compromises and concessions to keep the coalition intact, which limited his ability to implement his policy agenda. There were allegations of corruption against some of his cabinet ministers, though his personal integrity was never questioned.In response to these allegations, he told, "I think taking into account the circumstances and the compulsions of a coalition polity, I have done as best as I could do under the circumstances."

His government was able to achieve several significant policy initiatives, National Rural Employment Guarantee Act (NREGA), Right to Information(RTI) and India –US civil Nuclear Deal etc.

As prime minister, Singh took several far-reaching decisions that continue to impact India even today. Once criticized as an accidental Prime Minister, his passing on October 17, 2023 has brought about a renewed appreciation for his leadership and vision, which have had a lasting impact on India's growth and development.

"I honestly believe that history will be kinder to me than the contemporary media, or for that matter, the opposition parties in parliament," he had rightly said.

Ex. General Manager

IMPORTANT CIRCULARS ISSUED

Date	circular No.	Subject
		HO Accounts & Audit Department
23-12-2024	804/2024-25	Master circular on limited review - december- 2024
23-12-2024	795/2024-25	Amendment in GST provisions considered applicable to Bank
23-12-2024	794/2024-25	Guidelines w.r.t. perquisite value of furnished/ unfurnished accommodation given to staff by the Bank
06-11-2024	636/2024-25	Policy on internal/office accounts - (as amended)
24-10-2024	594/2024-25	Applicability of reverse charge on renting of any immovable property other than residential dwelling by any unregistered person to any registered person w.e.f. 10.10.2024
24-10-2024	591/2024-25	Amendment in Income Tax Rules Forms considered applicable to Bank
		HO Credit Department
06-11-2024	690/2024-25	e-BG through LOS-Perfectlend
		HO Credit Monitoring & Policy Department
20-12-2024	789/2024-25	Sanctioning of non-fund credit facilities to non-constituent borrowers
17-12-2024	774/2024-25	Payment to External Due Diligence Agencies for enhanced amount as per Loan Policy of the Bank
11-11-2024	638/2024-25	IBA SCHEME FOR RECOMMENDING TRANSPORT OPERATORS TO MEMBER BANKS: Additions / Renewals / Withdrawal/ Non-Renewal/ Change of address with renewal during the period 1st Oct, 2024 to 31th Oct, 2024.
		HO Foreign Exchange Department
31-12-2024	822/2024-25	Notional rate w.e.f. 01.01.2025
29-11-2024	720/2024-25	Non-resident guarantees availed by persons resident in india
29-11-2024	719/2024-25	Directions on compounding of contraventions under fema, 1999
29-11-2024	710/2024-25	Opening of nostro account for (aed) transactions
09-10-2024	549/2024-25	Nrise deposit campaign
		HO Fraud Monitoring Department
31-12-2024	832/2024-25	Cases of Frauds/Attempted Frauds/Third Party Entities involved in Frauds (Sharing of Information)
09-10-2024	548/2024-25	Standard operating procedure for lodging complaint through PSB UNIC and handling of Cyber/Digital fraud in CRM portal
07-10-2024	537/2024-25	Cases of Frauds/Attempted Frauds/Third Party Entities involved in Frauds (Sharing of Information)
		HO General Administration Department
20-12-2024	785/2024-25	Bank's "Policy for acquisition of accommodation on lease hiring, de-hiring, shifting and surrender of premises and Off Site ATMs."
16-12-2024	767/2024-25	Insurance Policy for i) Furniture & Fixture ii) Plant & Machinery iii) Computers iv) Bank Owned Premises.
16-12-2024	765/2024-25	Change of Address of Branch Batala (B0094), Sunet (S0159), Kalamboli (K1187) and Zonal Office Gurdaspur (Z8004).
11-11-2024	639/2024-25	Change of Name of GSKS Batala (B0543) Branch
		HO Human Resources Development Department
27-12-2024	805/2024-25	Specialization through job families – PSB unnati
23-12-2024	796/2024-25	Declaration of Banking Industry as "Public Utility Service" under Industrial Disputes Act 1947
19-12-2024	782/2024-25	Provisions for Compensation/Compensatory Leave to officers for working on Sundays/Holidays and Out of pocket expenses to staff members for working in shift duties or during extended working hours – reg.
02-12-2024	718/2024-25	Introduction of application and acceptance of resignation/ VRS in PSB kutumb (hrms)
30-11-2024	713/2024-25	Promotion from Asst General Manager (SMGS-V) to Deputy General Manager (TEGS-VI) 2024-25 from Panel List
28-11-2024	699/2024-25	Rewards/ recognition module in HRMS – PSB wall of fame
20-11-2024	673/2024-25	Employee survey for fy 2024-25
18-11-2024	659/2024-25	Scheme for reimbursement of fees for courses offered by apex institutes and ed-tech platforms
14-11-2024	650/2024-25	Training Policy of the Bank - Addendum
14-11-2024	648/2024-25	Policy of leased accomodation provided by the bank to the eligible officers in terms of regulation 22 & 25 of punjab & sind bank (officers') service regulations- 1982
14-11-2024	647/2024-25	Metrics for performance linked incentive (pli)
14-11-2024	646/2024-25	Scheme for rewarding employees based on performance-psb utkrisht
14-11-2024	645/2024-25	Reimbursement of creche allowance/ daycare facilities to eligible employees of the bank
14-11-2024	644/2024-25	Facility for purchase of ipad/ tablet/ laptop and reimbursement of petrol expenses to public relations officer (pro)
11-11-2024	637/2024-25	Promotion process 2025-26- clerical cadre to officers cadre in jmgs-i
11-11-2024	624/2024-25	Promotion process 2025-26 - calling of options from provisionally eligible candidates
07-11-2024	628/2024-25	Tentative vacancies for promotion of officers from mmgs-ii to mmgs-iii, jmgs-i to mmgs-ii, and clerk to jmgs-i for the promotion process 2025-26
04-11-2024	623/2024-25	Annual performance appraisal reports for fy 2024-25 (as on 31.03.2025) And onwards
30-10-2024	612/2024-25	Promotion from Asst General Manager (SMGS-V) to Deputy General Manager (TEGS-VI) 2024-25 from Panel List
28-10-2024	601/2024-25	Launch of PSB KUTUMB Android Mobile Application on Google Play Store
14-10-2024	560/2024-25	REG: Reconstitution of the Internal Complaints Committee (ICC) in terms of Banks policy on Prevention, Prohibition and Redressal of Sexual Harassment of women at workplace.
04-10-2024	535/2024-25	"PSB Jeevan Sahara"- COMPREHENSIVE SCHEME FOR APPOINTMENT ON COMPASSIOANTE GROUNDS OR PAYMENT OF EX-GRATIA AMOUNT IN LIEU OF APPOINTMENT ON COMPASSIONATE GROUNDS.
		HO Inspection Department
14-11-2024	657/2024-25	General advisory for adherence to the Bank's Systems and Procedures for Branch Operations

FROM 01.10.2024 TO 31.12.2024

Date	circular No.	Subject
		HO Law & Recovery Department
30-12-2024	814/2024-25	PSB RIN MUKTI III
13-12-2024	757/2024-25	Timely payment of advocate fee bills
11-12-2024	748/2024-25	'Schedule' for details of legal heirs of borrower(s) to be obtained along with application form of various loan schemes
18-11-2024	661/2024-25	Policy on title investigation, index inspection of properties and non-encumbrance certificate
18-11-2024	658/2024-25	Monthly review of cases pending before drts/drats by the zonal manager
04-10-2024	530/2024-25	Timely filing of cases and compliance of directions issued by hon'ble ncdrc and hon'ble supreme court of india in cases filed by/ against the bank
		HO Provident Fund Department
23-12-2024	797/2024-25	Tie-up Hospitals/HealthCare centers for healthcare services & General Health Checkup of Employees and Retirees
13-12-2024	761/2024-25	Educational Scholarship for Meritorious Children of Staff Members through HRMS
19-11-2024	671/2024-25	Empanelment of Medical Diagnostic Lab for general health checkup of Employees and Retirees
14-11-2024	652/2024-25	Reimbursement of Expenses on General Health Checkup for Staff Members, Retired Employees & their Spouse
19-10-2024	579/2024-25	Special Scheme for Granting Loan to Ex-Staff pensioner / Family Pensioners of Punjab & Sind Bank to pay premium for IBA's Group Medical Insurance Policy for 2024-25
14-10-2024	562/2024-25	IBA's Group Medical Insurance Scheme for Retired Officers / Workmen Employees for the period 01.11.2024 to 31.10.2025
		HO Planning & Development Department
31-12-2024	821/2024-25	Merger of Branch - Ulsoor under Chennai Zone
31-12-2024	820/2024-25	Opening of New Branche - Dumka Under Kolkata Zone
31-12-2024	819/2024-25	Opening of New Branche - Thrissur Under Chennai Zone
20-12-2024	788/2024-25	Opening of New Branch - Madhapar - Under ZO Gandhinagar
11-12-2024	745/2024-25	OPENING OF NEW BRANCH - Sakrai Timbo under Gandhinagar Zone
28-11-2024	700/2024-25	Opening of New Branch - Uttarkashi
22-11-2024	684/2024-25	Opening of new branches
14-11-2024	643/2024-25	Performance Metrics for Reward Program under MD & CEO Club Membership and ED Club Membership for FY 2024-25
14-11-2024	622/2024-25	Enhancement of Withdrawal Limit through Bank Withdrawal Slip
12-11-2024	631/2024-25	Introduction of New Special Fixed Deposit Product "PSB Green Earth".
21-10-2024	583/2024-25	INTRODUCTION OF NON CALLABLE RETAIL TERM DEPOSIT SCHEME "PSB DHAN KUBER". (Ammendment in Existing Circular 296/2024-25 dated 11-07-2024)
		HO Priority Sector Advances Department
31-12-2024	823/2024-25	Collateral free Agricultural loans including loans for allied activities from existing limit of Rs 1.60 Lakh to Rs. 2.00 Lakh per borrower
24-12-2024	801/2024-25	PSB agriculture infrastructure fund (psb aif) scheme
24-12-2024	800/2024-25	PSB smart scope msme loans
20-12-2024	791/2024-25	Specialized branches for msme & housing loan
16-12-2024	775/2024-25	Enhancement In Extent Of Guarantee Coverage In Respect Of Women Led Enterprises
29-11-2024	706/2024-25	PSB msme green investment and financing for transformation scheme (msme- gift scheme)
29-11-2024	705/2024-25	PSB mse scheme for promotion and investment in circular economy (mse-spice scheme)
25-10-2024	600/2024-25	PSB business loan scheme for young india
25-10-2024	599/2024-25	PSB samraddh mahilla loan scheme
25-10-2024	598/2024-25	PSB go-green financing scheme
18-10-2024	577/2024-25	MoU With Chamber of Indian Micro Small and Medium Enterprises (CIMSME) For Financing MSMEs
		HO General Operations Department
24-12-2024	799/2024-25	PSB Customer Retention Campaign-2.0 for activation of accounts which turned inoperative from 01.04.2024 to 20.12.2024. Campaign period is from 26.12.2024 to 31.01.2025
19-12-2024	783/2024-25	Forthcoming General Elections to Legislative Assembly of Delhi, 2025 – SOP on Transportation of clean and genuine cash by banks.
12-12-2024	752/2024-25	Advisory - Forthcoming General Elections to Legislative Assembly of Delhi - Facilitation for opening of separate bank account and cheque book to the prospective candidates
09-12-2024	740/2024-25	Doorstep Banking Service (DSB)-Festival Campaign from 11.12.2024 to 31.12.2024
02-12-2024	727/2024-25	Direction on Note Sorting Machines: Standards issued by the Bureau of Indian Standards and Certification of Note Sorting Machines-Standard Operating Procedure.
21-11-2024	679/2024-25	Waiver of Doorstep Banking Service Charges for Differently Abled Customers of Bank for PSB Alliance's Doorstep Banking Service.
10-10-2024	555/2024-25	'नई पहल-2' for tracing and settling the unclaimed deposits of CASA, TD & CC/OD accounts in where balance is between Rs. 500/- to 50,000/-
		HO Marketing & Insurance Department
03-12-2024	728/2024-25	Launch of campaign "har ghar kuber" for sourcing of recurring deposit account
02-12-2024	721/2024-25	Campaign - mission casa 500k
01-10-2024	522/2024-25	PSB dhan sanchay abhiyan

जीवन के नवीन अध्याय का आरंभ...

बैंक के स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, रोहिणी नई दिल्ली में सेवानिवृत्ति को खुशहाल एवं स्वस्थ बनाने पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

Poetry: The Inner Soul

An Eye without spectacles

Barricades on road
Full-on obstacles;
Bridges have to appear
Says an Eye without spectacles

Sight behind bars
Scars logically dealt;
Superb is the chemistry
All Solids have to melt

Let Soul controls you
'How & When' in mind;
He 'Who' have to handle
I see myself BLIND

'Know that'
With him in action
No need of reaction;
Super Power attraction
Nothing can be distraction

Just believe!

Gurjeet Singh
Manager
HO Inspection Department

She is the World

Growing up, I admired a woman,
Doting on her with eyes full of veneration,
She is a mother,
God's wondrous creation.
She is a woman,
Of stature and grace,
When in need of rest,
Better than her lap, I couldn't find a place.
She is a woman,
With tremendous charisma,
How she frames sadness into smiles,
Is a beautiful enigma.
She is a woman,
Wiser than the wise,
When ugly thoughts take over,
She says, "look yourself through my eyes".
She is the world to me,
With her presence,
Peace of mind she unfurls,
And her heart, as I am positive,
Is among the wonders of the world.

Amisha Srivastava
Customer Service associate
Zo Bareily

श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर, महाप्रबंधक के आंचलिक कार्यालय बरेली के दो दिवसीय दौरे के दौरान एमएसएमई कैंप एवं शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।

नवीनतम तकनीक एवं डिजिटल बैंकिंग

रूप कुमार

आज के समय में तकनीक ने हमारे जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है और यह क्षेत्र वित्तीय सेवाओं में भी बड़ा बदलाव ला रहा है। डिजिटल बैंकिंग इसका मुख्य उदाहरण है, जो अब केवल बैंकिंग सेवाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक बदलाव का हिस्सा बन गया है। डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं की सुगमता और प्रभावशीलता में वृद्धि हुई है, और यह दिन-प्रतिदिन और अधिक उन्नत हो रही है। नवीनतम तकनीक के साथ, डिजिटल बैंकिंग ने ग्राहकों के अनुभव को बदल दिया है और भविष्य में वित्तीय सेवा क्षेत्र को नए आयामों तक पहुँचाने की क्षमता रखता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था अनौपचारिक भुगतान के दायरे से निकल कर औपचारिक के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही है। इसमें तकनीक ने बेहतर भूमिका निभाई है। देश में जब प्रधानमंत्री जन धन योजना का आरंभ हुआ तो उस समय तकनीक ही थी जिसकी वजह से लगभग 38 करोड़ से भी ज्यादा खाते खोले गए जोकि बहुत बड़ा रिकॉर्ड था। यही नहीं तकनीक से वित्तीय जगत का हर क्षेत्र बेहतर हो रहा है।

डिजिटल बैंकिंग की संकल्पना और नवीनतम तकनीक

डिजिटल बैंकिंग, बैंकों द्वारा दी जाने वाली उन सभी सेवाओं को संदर्भित करता है जो इंटरनेट, मोबाइल ऐप्स, या अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से प्रदान की जाती हैं। इसमें बचत खाता संचालन, ऋण आवेदन, बिल भुगतान, ट्रांसफर, निवेश, और कई अन्य बैंकिंग सेवाएँ शामिल हैं। डिजिटल बैंकिंग की बढ़ती लोकप्रियता मुख्यतः समय और स्थान की स्वतंत्रता, त्वरित सेवाओं, और विभिन्न तकनीकी उपकरणों द्वारा सरलता के कारण है।

दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि खाता खुलवाने से लेकर लेन-देन करने तक तकनीक का इस्तेमाल डिजिटल बैंकिंग कहलाता है। तकनीक की मदद से आपका बैंक हमेशा आपके साथ रहता है और कभी भी उसकी सेवाओं का फायदा उठाया जा सकता है। आज की रफ्तार भरी जिंदगी में जब सीमित समय में ही हमें सभी काम निबटाने

होते हैं तो ऐसे में प्रत्येक मिनट का महत्व होता है। इसी भागादौड़ी के बीच यदि बैंक जाना पड़े तो आधा दिन तो चुटकियों में ही निकल जाता है। ऐसे में डिजिटल बैंकिंग ने ग्राहकों को बड़ी राहत दी है। डिजिटल बैंकिंग अथवा ऑनलाइन बैंकिंग के जरिए आप मिनटों में पैसों का लेन-देन, ऋण के लिए आवेदन व अन्य बैंक से संबंधित कई काम कर सकते हैं और तो और ये सब काम करते वक्त न ही आपका समय बरबाद होता है और न ही आपको इसके लिए किसी प्रकार का अतिरिक्त शुल्क देना पड़ता है।

आज, बैंकिंग सेवाओं की पहुंच भारत के सभी परिवारों तक है। यूपीआई और रूपे डेबिट कार्ड जैसी प्रमुख पहलों ने इस ट्रेंड को और तेजी दी है। इसी तर्ज पर, भारत नेट मिशन दूरदराज के क्षेत्रों में इंटरनेट पहुंचा रहा है, जिससे तकनीक से संचालित बैंकिंग सेवाओं का मार्ग भी प्रशस्त हो रहा है। भारत में इंटरनेट यूजर्स के बढ़ते आधार के साथ, बैंकों के रिटेल टचपॉइंट्स पर बहुत ज्यादा लोगों से डील नहीं करना होता है। वे अब बड़े पैमाने पर इन ग्राहकों को अपने डिजिटल यानी स्मार्टफोन ऐप्लिकेशन पर प्राप्त करते हैं। यह ग्राहकों को विशेष रूप से इसके लिए समय निकाले बिना हर तरह का लेन-देन का अधिकार देता है। यूपीआई की तकनीकी खासियतों (जिसमें बैंक और नॉन-बैंक प्रोवाइडर्स में इंटरऑपरेबिलिटी शामिल हैं) ने लेन-देन की लागत के साथ इसमें लगने वाला वक्त भी काफी हद तक कम कर दिया है।

भारत दूरदराज के क्षेत्रों के बीच एईपीएस (आधार-सक्षम भुगतान प्रणाली) द्वारा संचालित बायोमेट्रिक लेन-देन में वृद्धि कर रहा है। इससे पहले तक भारतीय निवेशक मोटे तौर पर एफडी, आरडी और रियल एस्टेट निवेश जैसे पारंपरिक निवेश साधनों पर निर्भर थे। दिन-प्रतिदिन के जीवन में डिजिटल प्रौद्योगिकी के आने से इसमें भी बदलाव शुरू हो गया। टियर 2 और टियर 3 शहरों में रिटेल निवेशकों ने अब म्यूचुअल फंड और स्टॉक जैसे एडवांस निवेश प्रोडक्ट्स का दोहन करना शुरू कर दिया है।

भारत भी अब ओपन बैंकिंग के विचार के प्रति खुल रहा है। आज जब बैंकों के पास एक बड़ा कस्टमर बेस और ऐतिहासिक डेटासेट उपलब्ध है, तकनीकी-संचालित स्टार्टअप और एनबीएफसी ने उनका उपयोग करने के लिए तकनीकी क्षमता विकसित की है। शुक्र है कि इनमें से अधिकांश हितधारकों को बाजार की मुख्य चुनौतियों से निपटने के लिए जुड़ते देखा जा रहा है। यह ट्रेंड भारत में बेहतर प्रोफाइलिंग, क्रेडिट अंडरराइटिंग और आधुनिक ग्राहकों के सामने आने वाली समस्याओं का सामना करने वाले उत्पादों के विकास के साथ वित्तीय सेवाओं के विस्तार को भी और गति दे रहा है। डिजिटल सेवाओं के विस्तार को संचालित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है स्वीकार्यता। शुक्र है कि हमने भारत में इस मोर्चे पर एक पॉजीटिव ट्रेजेक्टरी देखी है। कुछ बड़ी घटनाओं ने भी इस ट्रेजेक्टरी को आकार दिया है। उदाहरण के लिए, डिजिटल पेमेंट अपनाने के बाद तेजी आई है। कोविड-19 लॉकडाउन में भी यही प्रवृत्ति देखी गई है। कोविड प्रकोप के मद्देनजर एईपीएस का उपयोग डाक सेवा पेशेवरों ने दूरदराज के क्षेत्रों के लोगों को अपने घरों में बैठे-बैठे नकदी निकालने में मदद करने के लिए किया है। इस तरह के आयोजनों में एफआई की तकनीकी क्षमताएं बाजार ट्रेंड को आकार देने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

नवीनतम तकनीक

पिछले 6 वर्षों के दौरान, डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने में आया है। आज देश में प्रत्येक दिन करोड़ों की संख्या में डिजिटल लेनदेन हो रहे हैं। डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से आप अपने घर बैठे ही बैंकिंग व्यवहार कर सकते हैं। इससे न केवल इन बैंकों की उत्पादकता में वृद्धि हुई है, बल्कि सामान्यजन को बैंकिंग सेवाएँ भी त्वरित गति एवं आसानी से उपलब्ध होने लगी हैं। आज नेट बैंकिंग के माध्यम से किए गए लेनदेन की जानकारी तुरंत मिल जाती है, एक स्थान से दूसरे स्थान को राशि का हस्तांतरण, पलक झपकते ही हो जाता है। देश कैश-लेस बैंकिंग सेवाओं की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है। मोबाइल बैंकिंग के बाद तो यह कहा जाने लगा है कि बैंक आपकी ज़ेब में है। कई ग्रामीण भी आज मोबाइल बैंकिंग एवं नेट बैंकिंग का इस्तेमाल करने लगे हैं। अन्य नवीनतम तकनीक के भी कुछ उदाहरण यहां देखे जा सकते हैं-

1. **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) -** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग बैंकों में ग्राहकों के व्यवहार का विश्लेषण करने, जोखिम मूल्यांकन करने और कस्टमाइज्ड सेवाएँ प्रदान करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित चैटबॉट्स अब 24x7 ग्राहक सहायता प्रदान कर रहे हैं, जबकि मशीन लर्निंग द्वारा धोखाधड़ी के मामलों का पता चलाना भी तेज और प्रभावी हुआ है।

2. **ब्लॉकचेन तकनीक -** ब्लॉकचेन, जो कि एक विकेंद्रीकृत डेटा संरचना है, ने बैंकिंग सेक्टर में सुरक्षा और पारदर्शिता को बढ़ाया है। यह तकनीक पेमेन्ट्स और ट्रांजैक्शन्स के मामले में सुरक्षा बढ़ाने के लिए उपयोग की जा रही है, साथ ही यह क्रिप्टोकरेंसी जैसे बिटकॉइन के माध्यम से वित्तीय सेवाओं में नई दिशा प्रदान कर रही है।

3. **बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन -** बायोमेट्रिक तकनीक जैसे कि फिंगरप्रिंट स्कैन, फेस रिकॉग्निशन और आइरिस स्कैनिंग अब बैंकिंग सेवाओं के एक अहम हिस्सा बन चुके हैं। ये तकनीकें खाताधारकों की पहचान को सुनिश्चित करने के लिए अधिक सुरक्षा प्रदान करती हैं और धोखाधड़ी के मामलों को कम करती हैं।

4. **क्लाउड कंप्यूटिंग -** क्लाउड कंप्यूटिंग ने बैंकों को अपने डेटा और एप्लिकेशनों को सुरक्षित और स्केलेबल तरीके से स्टोर करने की सुविधा दी है। इसका उपयोग बैंकों के ऑपरेशन्स को अधिक लचीला और लागत-कुशल बनाने के लिए किया जाता है।

5. **इंटरनेट ऑफ थिंग्स -** इंटरनेट ऑफ थिंग्स का उपयोग बैंकिंग सेवाओं में नए अनुभव बनाने के लिए किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, स्मार्ट एटीएम मशीनें और भुगतान गेटवे, जो अपने आप ही ग्राहक की गतिविधि और जरूरत के अनुसार सेवाएँ प्रदान करते हैं, डिजिटल बैंकिंग के अनुभव को और भी व्यक्तिगत बना रहे हैं।

6. **फोन बैंकिग तथा इंटरनेट बैंकिंग** - बैंकिंग जगत में क्रान्तिकारी घटना है- फोन बैंकिंग तथा इंटरनेट बैंकिंग। इसमें जहाँ एक जगह पर आंकड़ों का संचयन कर दिया जाता है और आप अपने फोन पर ही अपने खातों की स्थिति का पता लगा सकते हैं, इसमें राशि का अंतरण या नामे कर सकते हैं। साथ ही कहीं बैठे आप फोन के जरिए बैंकिग कारोबार कर सकते हैं। इसमें बैंक की सभी शाखाओं को आंतरिक इंटरनेट के जरिए जोड़ दिया जाता है। 'कोर बैंकिंग' इस दिशा में नवीनतम प्रयोग है, जिसमें बैंक की किसी भी शाखा में आपका खाता हो और आप उस बैंक की इंटरनेट से जुड़ी किसी भी शाखा से बैंकिंग लेन-देन कर सकते हैं।

7. **ई-वॉलेट या डिज़िटल वॉलेट** - ई-वॉलेट या डिज़िटल वॉलेट जिसे आप ई-बटुआ या डिजिटल बटुआ भी कह सकते हैं, एक इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस है जो एक व्यक्ति को इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन करने की अनुमति देता है। बैंकिंग जगत में नवीनतम तकनीक का प्रयोग है। ई-वॉलेट वस्तुओं को खरीदने के लिए पैसे की जगह इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्रीपेड खाता है।

   आपने मोबिकविक, पेटीम आदि के विज्ञापन टी.वी. पर ज़रूर देखे होंगे। ये सभी एक तरह के ई-वॉलेट हैं। ई-वॉलेट, स्मार्टफ़ोन एवं कंप्यूटर का उपयोग कर भुगतान करने का एक नवोन्मेषी माध्यम है। आज देश के करोड़ों लोग स्मार्टफ़ोन का उपयोग करते हैं। इसलिए आजकल लोगों का रुख क्रेडिट कार्ड और डेविट कार्ड से हटकर ई-वॉलेट की तरफ हो गया है। ई-वॉलेट एक तरह से भौतिक बटुए का प्रतिस्थापन है। वे दिन गए जब आपको खरीदारी के लिए अपने बटुए को ले जाने की जरूरत होती थी। आज आप ई-वॉलेट का उपयोग कर कुछ भी खरीद सकते हैं। आज आपका स्मार्टफ़ोन ही आपका बटुआ बन गया है।

8. **भीम एप/ यूपीआई** - यह वित्तीय लेनदेन हेतु भारत सरकार द्वारा प्रक्षेपित एक मोबाइल एप है। डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए और इंडिया को कैश फ्री करने के उद्देश्य से इस मोबाइल एप का शुभारंभ किया गया जोकि बैंकिंग में तकनीकी का नवीनतम प्रयोग है।

   'भीम' एप का पूरा नाम **'भारत इंटरफेस फॉर मनी'** है। यह यूआईपी आधारित पेमेंट सिस्टम पर काम करता है और इसके जरिए ऑनलाइन पेमेंट आसानी से की जा सकती है। इससे पैसे भेजने के लिए सिर्फ एक बार अपना बैंक अकाउंट नंबर पंजीकृत करना होता है और एक यूपीआई पिनकोड सृजित करना होता है। इसके बाद हमारा मोबाइल नंबर ही पेमेंट एड्रेस हो जाता है। हर बार अकाउंट नंबर डालने की जरूरत नहीं होती है। भीम एप में लगभग सभी भारतीय बैंक खातों को इस्तेमाल किया जा सकता है।

चुनौतियाँ और भविष्य

हालाँकि डिजिटल बैंकिंग ने कई लाभ प्रदान किए हैं, फिर भी कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं। इनमें साइबर सुरक्षा, डेटा प्राइवेसी, और डिजिटल समावेशन जैसी समस्याएँ शामिल हैं। इसके अलावा, कई स्थानों पर इंटरनेट की सुगमता या डिजिटल साक्षरता की कमी भी एक बड़ी समस्या हो सकती है। हालाँकि, जैसे-जैसे तकनीक में सुधार हो रहा है, इन चुनौतियों को सुलझाने के उपाय भी खोजे जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, नए सुरक्षा उपायों का विकास और दूरदराज के इलाकों में इंटरनेट की पहुंच बढ़ाना।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि तकनीक ने बैंकिंग तथा लोगों की जिंदगी को आसान बनाया है, किंतु इसमें की गई थोड़ी सी भी लापरवाही आपको भारी नुकसान पहुँचा सकती है। जब आप बैंक की शाखा में जाकर बैंकिंग सेवाओं का फायदा उठाते हैं तो आपकी सूचना को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी बैंक की होती है, किंतु जैसे ही आप डिजिटल बैंक का इस्तेमाल करते हैं तो आप अपने जोखिम पर सेवाओं का फायदा उठाते हैं । ऐसे में सुरक्षा संबंधी बातों को ध्यान में रखना बहुत जरूरी हो जाता है। अतः कहा जा सकता है कि यद्यपि हमारी अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण की दिशा में अग्रसर हो चुकी है परन्तु इस दिशा में किये गये बैंकिंग सुधारों की रणनीति में कहीं न कहीं प्रयासों की सफलता में संदेह होता है। हमारे दृष्टिकोण से भारत में वित्तीय सुधारों के अन्तर्गत संरचनात्मक परिवर्तन होना चाहिये।

निष्कर्ष

डिजिटल बैंकिंग ने वित्तीय क्षेत्र में क्रांति ला दी है और इसके आने वाले दिनों में और भी व्यापक रूप से फैलने की उम्मीद है। नवीनतम तकनीकों का उपयोग करके, बैंक अब ग्राहकों को अधिक सुविधाजनक, सुरक्षित, और प्रभावी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। हालांकि, इसे अपनाने में चुनौतियाँ हैं, फिर भी डिजिटल बैंकिंग का भविष्य उज्ज्वल है, और यह हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है।

राजभाषा अधिकारी
प्र. का. राजभाषा विभाग

आंचलिक कार्यालय कोलकाता द्वारा श्री प्रवीण कुमार मोंगिया, महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रबंधक, कोलकाता की उपस्थिति में शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।

आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम में श्री राजेन्द्र कुमार रैगर, महाप्रबंधक की उपस्थिति में समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।

आंचलिक कार्यालय देहरादून में शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक

श्री राजेन्द्र कुमार रैगर, महाप्रबंधक की अध्यक्षता में शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया

श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर, महाप्रबंधक के मार्गदर्शन में शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया

बैंक के क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़ श्री चमन लाल शींहमार की अध्यक्षता में अंचल कार्यालय फरीदकोट द्वारा शाखा प्रबंधकों के साथ समीक्षा बैठक का आयोजन

आँचलिक कार्यालय होशियारपुर द्वारा बैंक के क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़ श्री चमन लाल शींहमार की उपस्थिति में एमएसएमई ग्राहक बैठक का आयोजन

भारतीय बैंकिंग-दशा और दिशा

मनोज कुमार गुप्ता

किसी भी देश के आर्थिक विकास का मुख्य आधार उस देश का बुनियादी ढाँचा होता है। यदि बुनियादी ढाँचा ही कमज़ोर हो तो कितना भी प्रयास किया जाए व्यवस्था को मज़बूत नहीं बनाया जा सकता है। यही कारण है कि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में विकास एवं उन्नति हेतु किये जाने वाले प्रयासों को बल प्रदान करने के लिये नीति निर्माताओं द्वारा एक ऐसे मार्ग का अनुसरण किया जाता है जिसके माध्यम से सरकार आम आदमी को अर्थव्यवस्था के औपचारिक माध्यम में शामिल कर सके और यह औपचारिक माध्यम है 'बैंक'। बैंक किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए एक धुरी के रूप में कार्य करते हैं। इसलिए बैंक अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। देश में वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में बैंक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हाल ही के समय में, केंद्र सरकार ने भारतीय बैंकिंग उद्योग को मज़बूत बनाए जाने के उद्देश्य से कई सुधारों की घोषणा की है। जैसे, ग़ैर निष्पादनकारी आस्तियों की समस्या से निपटने के लिए दिवाला एवं दिवालियापन संहिता लागू की गई। देश में सही ब्याज दरों को लागू करने के उद्देश्य से मौद्रिक नीति समिति बनायी गई। साथ ही, पिछले पाँच/छह वर्षों के दौरान केंद्र सरकार द्वारा इंद्रधनुष योजना को लागू करते हुए, सरकारी क्षेत्र के बैंकों को लगभग तीन लाख करोड़ रुपए की सहायता उपलब्ध करायी गई।

भारत में बैंकिंग प्रणाली की स्थापना

देश में बैंकिंग व्यवस्था की शुरुआत को इतिहासकार लगभग 18वीं शताब्दी से ही मानते हैं। इसके बारे में कहा जाता है कि अंग्रेजों ने आधुनिक बैंकिंग प्रणाली को लाकर भारत की अर्थव्यवस्था में क्रांति कर दी थी। अंग्रेजों ने सुनियोजित तरीके से धन की उगाही के लिये तीनों प्रेसीडेंसियों मसलन मद्रास, बंबई और बंगाल में बैंकों की स्थापना की। इसके बाद तीनों प्रेसीडेंसी बैंकों को मिलाकर 1921 में इम्पीरियल बैंक की स्थापना हुई।

भारत की स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1955 को इम्पीरियल बैंक की सभी संपत्तियों का अधिग्रहण करके स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने कार्य करना

शुरू कर दिया। आपको बता दें कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया देश का सबसे पुराना और सबसे बड़ा व्यापारिक बैंक है। इसे राष्ट्रीयकृत बैंकों की श्रेणी में नहीं रखा जाता है। राष्ट्रीयकृत बैंकों में उन बैंकों को रखा जाता है जो 1969 के राष्ट्रीयकरण और उसके बाद सरकार के अधीन आये हैं।

यह तो बात थी स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बारे में, अब बात करते है केन्द्रीय बैंक अर्थात रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया के बारे में। 1926 हिल्टन यंग कमीशन ने इस बात का सुझाव दिया था कि इम्पीरियल बैंक से अलग एक केन्द्रीय बैंक को स्थापित किया जाना चाहिये जो विदेशी विनिमय कोष प्रबंधन के साथ-साथ नोट भी जारी कर सके। यहाँ यह भी जानना जरूरी है कि हिल्टन यंग कमीशन पहला कमीशन था जिसने रिज़र्व बैंक को लाने की बात कही थी। 1934 में रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया एक्ट के जरिये 1 अप्रैल,1935 से रिज़र्व बैंक ने कार्य करना शुरू कर दिया। वर्मा विभाजन के बाद रिज़र्व बैंक ने 1942 तक वहाँ की करेंसी अथॉरिटी और 1947 तक वहाँ की सरकार के बैंकर के रूप में भी कार्य किया था। देश के विभाजन के बाद 1948 तक इसने पाकिस्तान के सेन्ट्रल बैंक के रूप में भी कार्य किया था। वर्ष 1949 में रिज़र्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और तब से यह देश का केन्द्रीय बैंक है।

भारतीय बैंकिंग की दशा

उस समय देश में भारतीय रिज़र्व बैंक और भारतीय स्टेट बैंक के अलावा भी कई अन्य व्यापारिक बैंक कार्य कर रहे थे। फिर भी ऐसा लगातार महसूस किया जा रहा था कि इन बैंकों के द्वारा कृषि, लघु एवं कुटीर उद्योग, गाँव और कस्बों की लगातार उपेक्षा की जा रही है। उस समय सरकार ने देश के आर्थिक विकास को बढ़ाने के लिये 1969 में 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। इस कदम को और विस्तार देते हुए सरकार ने 1980 में 6 और बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। इन सबके बावजूद भी इसके वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सका। इसलिए सरकार ने बैंक क्षेत्र में सुधार के लिये कई आयोगों का गठन किया।

बैंक में एनपीए की समस्या

पिछले कुछ वर्षों में बैंकों द्वारा दिये जा रहे ऋण गैर निष्पादित परिसंपत्तियों में बदल गए हैं। यस बैंक द्वारा भी रिलायंस ग्रुप, आईएल एवं एफएस, डीएचएफएल, जेट एयरवेज़, एस्सार शिपिंग, कैफे कॉफी डे जैसी कंपनियों को ऋण दिया गया, जो बाद में एनपीए में बदल गए। गैर निष्पादित परिसंपत्तियों के मामले में सरकारी बैंकों की स्थिति निज़ी बैंकों से ज़्यादा खराब है।

एनपीए का प्रभाव

बैंकों में एनपीए बढ़ने से विकट समस्या उत्पन्न हो जाती है, जैसेकि-

1. एनपीए के चलते बैंकों को मिलने वाला लाभ कम हो जाता है, जिससे सरकार के पास राजस्व कम पहुँचता है, ऐसे में सरकार की निवेश करने की क्षमता में गिरावट आती है। निवेश कम होने से अर्थव्यवस्था की विकास दर कम हो जाती है, साथ ही बेरोज़गारी की समस्या में बढ़ोतरी होती है।

2. बैंकों में एनपीए की वृद्धि से नए लोगों को ऋण मिलने में कठिनाई होती है, जिससे अर्थव्यवस्था का आकर सिकुड़ता है।

3. जमाकर्त्ताओं का बैंक पर विश्वास कमज़ोर हो जाता है और वे बैंक में पैसा जमा करने से कतराते हैं।

4. एनपीए के रूप में जब बैंक का लोन फँस जाता है तो उसकी प्रोविजनिंग के लिये उसे मुनाफ़े से एक निश्चित राशि अलग रखनी होती है, मुनाफ़ा कम होने का असर बैंक के विस्तार और ग्राहक सेवाओं पर पड़ता है।

बैंकिंग क्षेत्र में सुधार

बैंकिंग क्षेत्र में सुधार करने के लिये सरकार ने 1991 में एम. नरसिंहम की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया था। इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि बैंकिंग क्षेत्र में चार स्तरीय ढाँचे की व्यवस्था की जाए जिसमें तीन या चार बड़े बैंक होंगे। एसबीआई इसमें शामिल होगा और इसे शीर्ष स्थान प्राप्त होगा तथा यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपना कार्य कर सकेगा। इसने कहा कि बेसल समिति द्वारा सुझाये गये उपायों को धीरे-धीरे प्राप्त करने की जरूरत है।

नरसिंहम समिति ने लाइसेंस प्रणाली को खत्म करने की भी बात कही थी। बैंकिंग क्षेत्र में सुधार के लिये दूसरी बार एम. नरसिंहम की अध्यक्षता में ही एक समिति का गठन किया गया। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में पूंजी खाते की परिवर्तनीयता को ध्यान में रखते हुए बैंकिंग प्रणाली को और अधिक मजबूत करने पर जोर दिया। इस समिति ने बड़े बैंकों को भी मिलाने पर बल दिया और कहा कि जहाँ पर कुछ अंतरराष्ट्रीय और कुछ राष्ट्रीय स्तर के बैंक हों वहाँ पर छोटे स्थानीय बैंकों को खोलने पर भी बल दिया जाना चाहिये जिससे किसी राज्य के स्थानीय व्यापार, उद्योग तथा कृषि को बढ़ावा मिल सके। इस लिहाज से रिज़र्व बैंक द्वारा नचिकेत मोर समिति का गठन किया गया। इस समिति ने छोटे व्यवसायों और कम आय वाले परिवारों के लिए व्यापक वित्तीय सेवाओं और भुगतान बैंकों को लाइसेंस देने संबंधी बात कही। इस समिति की अनुशंसा के आधार पर ही सरकार द्वारा इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक यानी IPPB को लॉन्च किया गया था।

बैंकों में सुधार के लिये बेसल 3 मानक को लाया गया। बेसल 3 बैंकिंग प्रणाली के उन पक्षों को सुधारने का प्रयास करता है जिसके कारण पूरे विश्व को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ा। इसकी वजह यह है कि विकसित अर्थव्यवस्थाओं को अपनी वित्तीय प्रणाली को बचाने के लिये बहुत धनराशि खर्च करनी पड़ती है। इसके लिये ये देश नहीं चाहते कि आने वाले समय में इस तरह की समस्या का सामना फिर से करना पड़े। इन सब वजहों से बैंकिंग व्यवस्था को कुछ इस प्रकार से नियंत्रित करना होगा जिससे न केवल बैंक की पूंजी में गुणात्मक सुधार हो बल्कि बैंकों की हानि सहने की क्षमता में भी बढ़ोतरी हो।

आज के समय में बैंकों का स्वरूप (दिशा)

आज के समय में बैंकिंग व्यवहार और उपभोक्ताओं की जरूरतों में परिवर्तन जिस तरीके से हो रहे हैं, वैसी स्थिति में बैंकों का भविष्य भी संकट के घेरे में है। अब तो यह भी माना जा रहा है कि परंपरागत बैंकिंग का दौर खत्म हो चुका है और बैंकलेस बैंकिंग अवधारणा मजबूत हुई है। इसी संबंध में एक बार बिल गेट्स ने कहा था कि "बैंकिंग तो जरूरी है, किन्तु बैंक नहीं।"

आज तकनीक ने बैंकों के स्वरूप को एकदम बदल दिया है। इसमें बिग डेटा, क्लाउड कंप्यूटिंग, स्मार्टफोन और ऐसे अन्य नवाचार शामिल हैं। मोबाइल बैंकिंग के आने से तो ग्राहकों और बैंक के बीच संवाद के तरीके में बहुत बदलाव आ गया है। मोबाइल बैंकिंग के द्वारा घर से दूर रहकर भी अपने बैंक के खातों की जानकारी ली जा सकती है। किसी भी समय खाते से पैसों को ट्रांसफर करना, बिलों का भुगतान इत्यादि किया जा सकता है। यह सुविधा 24 घंटे उपलब्ध होती है। इसी प्रकार एटीएम मशीनों ने बैंकिंग व्यवस्था को बहुत हद तक सरल, सुरक्षित और सुविधाजनक बना दिया है।

कैशलेस अर्थव्यवस्था ने बैंकिंग स्वरूप में और बड़ा परिवर्तन किया है। इससे एक ओर जहाँ लोगों को लंबी कतारों से मुक्ति के साथ-साथ समय की बचत हुई तो वहीं दूसरी ओर कालेधन को रोकने में बहुत हद तक मदद भी मिली। इसके कारण अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता आयी। कैशलेस व्यवस्था आने के कारण रुपया लोगों के पास से तो हटा ही किन्तु उसका स्थान प्लास्टिक मुद्रा ने लिया। प्लास्टिक मुद्रा ने लोगों की समस्या के समाधान के साथ-साथ पर्यावरण को तो लाभ पहुँचाया ही इसके साथ ही साथ इससे अर्थव्यवस्था में तेजी भी आयी। कैशलेस अर्थव्यवस्था को पेमेंट्स बैंकों ने भी आगे बढ़ाने में मदद की है।

अभी हाल ही के समय में एक निजी क्षेत्र के बैंक को कोरपोरेट अभिशासन संबंधी कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा था। निजी क्षेत्र के इस बैंक में पिछले कई सालों से प्रमोटर स्वयं ही मुख्य कार्यपालक अधिकारी के तौर पर कार्य कर रहे थे। शायद इसी वजह से कई प्रकार की समस्याएँ जो बैंक में आंतरिक रूप से महसूस की जा रही थीं, परंतु बाहर नहीं आ पाईं।

निजी क्षेत्र की बैंकिंग पर पड़ता प्रभाव: निजी क्षेत्र की बैंकों में प्रायः यह देखा गया है कि जब प्रमोटर ख़ुद ही उस बैंक के मुख्य कार्यपालक अधिकारी के रूप में कार्य करता है तब वह स्वयं ही सभी उच्च अधिकारियों की नियुक्ति भी करता है। इस प्रकार, प्रमोटर का बैंक में बहुत ज़्यादा प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। कई बार यह आशंका व्यक्त की जाती रही है कि इस प्रकार के निजी बैंकों में एक ओर तो कुछ चुनी हुई कंपनियों को ही भारी मात्रा में ऋण प्रदान कर दिया जाता है तो वहीं दूसरी ओर कुछ उच्च मूल्य की जमाराशियाँ तुलनात्मक रूप से ब्याज की अधिक दर प्रदान कर कुछ विशेष कंपनियों से प्राप्त की जाती हैं। इस प्रकार के बैंकों द्वारा न तो बचत एवं चालू खातों में कम ब्याज की दर पर जमाराशियाँ प्राप्त किए जाने का प्रयास किया जाता है और ना ही खुदरा मूल्य के ऋण प्रदान किए जाने का प्रयास होता है। इस प्रकार इन बैंकों में संपत्तियाँ एवं देयताएँ दोनों तरफ़ ही जोखिम बढ़ जाता है। उक्त के साथ ही, प्रमोटर के समूह की कुछ कंपनियों को वित्तीय कंपनियाँ बनाकर संबंधित व्यवसाय भी किया जाता है। जिससे अंततः समूह की इन कंपनियों के हितों के बीच टकराव उत्पन्न होने लगता है। इस तरह की स्थितियाँ सामान्यतः तभी पनपती हैं जब प्रमोटर ख़ुद कई साल तक मुख्य कार्यपालक अधिकारी बना रहता है। इस प्रकार के बैंकों में ग़ैर निष्पादनकारी आस्तियों की एवर ग्रीनिंग भी की जाती है।

समाधान: किसी भी संस्था को स्थापित किए जाने पर शुरुआती दौर में उस संस्था की मजबूत नींव रखने के उद्देश्य से प्रमोटर को कुछ समय के लिए मुख्य कार्यपालक अधिकारी बनाये जाने संबंधी छूट दी जा सकती है क्योंकि शुरुआती दौर में अक्सर प्रमोटर, संस्था के निर्माण के लिए, अपने पूरे मनोयोग से काम करता है। एक बार संस्था के सफलतापूर्वक खड़े होने के बाद उस संस्था और व्यक्ति के बीच का अंतर कम अथवा समाप्त होने लगता है, यह एक मानव प्रकृति है, जिसके चलते प्रमोटर संस्था के मुख्य कार्यपालक अधिकारी के रूप में बहुत अधिक शक्तिशाली व्यक्ति के तौर पर उभर आता है और उस संस्था के सभी कार्यों में उस व्यक्ति का नियंत्रण हो जाता है।

कई बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन संबंधी मुद्दों में विसल ब्लोअर की भूमिका को भी कई बार उठाया जाता रहा है। जिन कंपनियों में प्रमोटर ही मुख्य कार्यपालक अधिकारी के तौर पर कार्य करता है वहाँ विसल ब्लोअर अपनी भूमिका का निर्वहन ठीक से नहीं कर पाता है। क्योंकि जब विसल ब्लोअर कोई मुद्दा उठाता भी है तो उसे बोर्ड की कमेटी अथवा वरिष्ठ कार्यपालकों की समिति के हवाले कर दिया जाता है और वे उसे नज़र अन्दाज़ कर देते हैं। इस प्रकार पारदर्शिता दिखाई नहीं देती है। लेकिन अब विसल ब्लोअर की भूमिका को मज़बूत बनाए जाने का प्रयास किया जा रहा है।

अब भारतीय रिज़र्व बैंक ने संवैधानिक लेख परीक्षकों की समय सीमा भी तय कर दी है, इसके पूर्व कई वर्षों तक एक ही संवैधानिक लेखा परीक्षक नियुक्त रहता था। संवैधानिक लेखा परीक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रहती है क्योंकि संस्था के सभी लेनदेन की जाँच उन्हें करनी होती है। इसी प्रकार कंपनी लॉ बोर्ड ने भी सभी स्वतंत्र निदेशकों की समय सीमा को बाँध दिया है। अभी तक कई कंपनियों में कुछ स्वतंत्र निदेशक कई सालों तक बोर्ड में सदस्य बने रहते थे। कुल मिलाकर प्रयास यह हो रहा है कि किस प्रकार बैंकों में जमाकर्ताओं के हित सुरक्षित रहें। बोर्ड के सदस्यों की बैंक के जमाकर्ताओं के प्रति भी कुछ जवाबदारी बनती है। हालाँकि अभी के नियमों के अंतर्गत, बैंक का प्रबंधन बैंक के बोर्ड के प्रति जवाबदेह होता है और बैंक का बोर्ड बैंक के शेयर होल्डर्ज़ के प्रति जवाबदेह रहता है। बैंकों में जबकि सबसे अधिक पैसा तो जमाकर्ताओं का लगा हुआ है, जिसे बैंक ऋण के रूप में प्रदान करते हैं। ऋण प्रदान करते समय पारदर्शिता का पूरा ध्यान

रखना चाहिए एवं इसी समय पर हितों के टकराव का भी पूरा ध्यान रखना ज़रूरी है। बैंक प्रबंधन को तो जमाकर्ताओं के ट्रस्टी के रूप में कार्य करना चाहिए। अतः बैंक के प्रबंधन एवं ऋण प्राप्तकर्ता के बीच की दूरी सम्बंधी सिद्धांत का पालन किया जाना भी अति आवश्यक है। भारतीय रिज़र्व बैंक के चर्चा पत्र में इस प्रकार के मुद्दों को भी छुआ गया है। बैकों में जोखिम प्रबंधन कमेटी एवं ऑडिट कमेटी आदि को भी मज़बूत बनाए जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की गई है।

निष्कर्ष

गौरतलब है कि वैश्वीकरण के दौर में बैंकों का स्वरूप लगातार बदल रहा है। पहले जहाँ बैंकों में लंबी-लंबी कतारें लगी रहती थीं, वहीं अब तकनीक ने इस कार्य को सरल और सुगम बना दिया है। तकनीक का प्रयोग करके पेमेंट बैंकों ने इस कार्य को और आसान बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक बैंकिंग विशेषकर कैशलेस अर्थव्यवस्था बैंकिंग लेन-देन के डिजिटलीकरण के दौर में चिंता का विषय जरूर है। परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने आईआईटी जैसे संस्थानों के साथ मिलकर विभिन्न तरीकों से इससे निपटने के प्रयास किये हैं। जन-धन योजना और डायरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर जैसी योजनाओं के माध्यम से बैंकिंग के जरिये वित्तीय समावेशन पर सरकार बहुत जोर दे रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकों की पहुँच न हो पाना भी चिंता का विषय है। क्योंकि दुर्गम और कठिन क्षेत्र होने के कारण कई क्षेत्रों में अभी भी बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं। सरकार ने बड़ी संख्या में बैंकिंग कॉरेस्पॉन्डेंट की नियुक्ति कर इस समस्या का समाधान करने का प्रयास किया है। ये बैंकिंग कॉरेस्पॉन्डेंट बैंकों तथा ग्रामीण जनता के बीच कड़ी का काम करते हैं। इसी प्रकार बैंकिंग क्षेत्र में सुधार के लिये हाल ही में सरकार ने तीन बैंकों के विलय का फैसला लिया है। इसमें देना बैंक, विजया बैंक और बैंक ऑफ बड़ौदा शामिल हैं। कुल मिलाकर, भारत का आज का बैंकिंग स्वरूप बदलते परिवेश में नए कलेवर अपना रहा है। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि आर्थिक विकास को और मजबूत करें।

वरिष्ठ प्रबंधक
प्र.का. सरकारी व्यवसाय विभाग

Pradeep Roy
Rettd. Chief Manager
Punjab & Sind Bank

Our Bank inks MoU with Indian Navy

Our Bank with a Commitment to serve our Naval Heroes inks MoU with Indian Navy Gaurav Bachat Defence Salary Package for Serving Personnel, Veterans, Veer Naris & Naval Civilians.

੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

Where service is a way of life

PSB UniC
You & I Connected

Celebrate this New Year with Amazing Offers

Just a Scan away

Sanction in just 30 mins#

PSB E-APNA GHAR
Loan in Minutes, Home for Life Time

To Avail Just Scan

PSB E-APNA VAHAN
Speed Meets Convenience

To Avail Just Scan

#Subject to Verifications, Legal/Valuation Reports, wherever applicable.

Visit here
https://digiloans.psb.co.in/psb/homeloan

Give a Missed Call on
8879806866

Visit here
https://digiloans.psb.co.in/psb/vehicleloan

Give a Missed Call on
8879840089